CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10.3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Fouhdation, Jalgac

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरानी जूतियों का कोरस

(कविताएँ)

15/XII/83

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाणी प्रकाशन
६१ एफ. कमला नगर, दिल्ली-११०००७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरानी जूतियों का कोरस

नागार्जुन

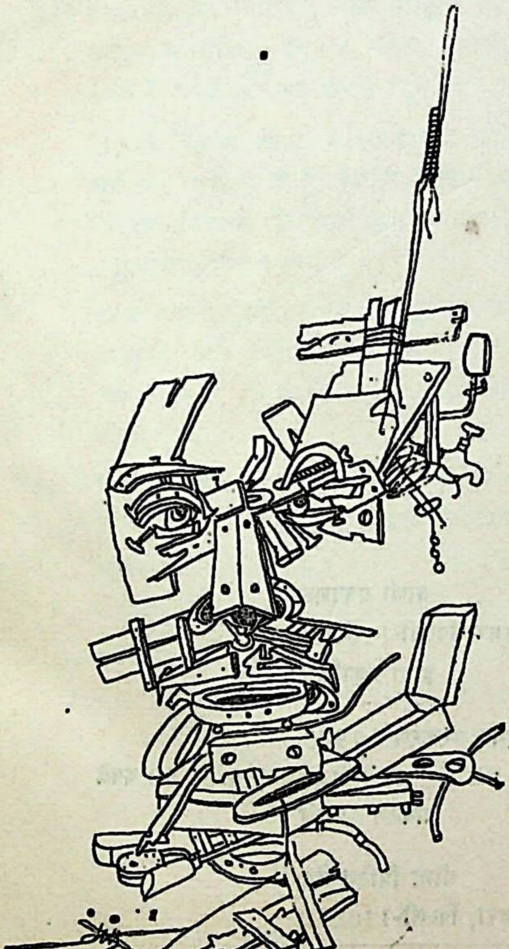

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाणी प्रकाशन
61-एफ, कमलानगर, दिल्ली-110007
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 1983
© नागार्जुन : मूल्य 35.00 रुपये
आवरण : पाली

सीमा प्रिंटिंग प्रेस
शाहदरा, दिल्ली-110032

Purani Jutiyon Ka Koras
(Poems) by Nagarjun

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यहाँ संकलित रचनाओं में से अधिकांश दीपक, कौमी बोली, सरस्वती, हंस, नया पथ, नया साहित्य, नई धारा, लोकयुद्ध, जनयुग, जनशक्ति, उत्तरार्ध, कथन, मुक्तधारा, हिंदी टाइम्स आदि में समय-समय पर छपती रही हैं।

'35 से '47 में रचित कविताओं को पूरी तरह संकलित कर पाना असंभव ही है, क्योंकि रचनाएँ या तो खो गई हैं, या पत्र-पत्रिकाओं के पुराने अंकों में बिखरी हैं और उनकी अनुपलब्धता एक समस्या है।

समय-समय पर इन रचनाओं को सुधी पाठकों ने मुक्त कंठ से सराहा है और विभिन्न शोध-ग्रंथों या संदर्भ-ग्रंथों में इनकी पंक्तियाँ 'कोट' की जाती रही हैं, पूरी रचना नहीं दिखलाई पड़ती थी।

किसी भी रचना को 'आउट ऑव् डेट' मानने का अधिकार मुझे तो नहीं है। रचनाओं के गुण-तत्त्व की परख का भार मर्मज्ञ पाठकों पर ही छोड़ता हूँ।

पाठ-भेद और अपूर्णता सम्बन्धी त्रुटियों का अभाव नहीं है, यह लाचारी रही है।

—शोभाकान्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रम

लो, देखो अपना चमत्कार ! '48 9
इतना जल्दी भूल गया ? '77 11
भारतेन्दु '50 12
अच्छा किया तुमने '81 17
पटनायक नागभूषण '81 20
साथी गणपति '49 23
फाँसी की सजा पाए हुए...बारह वीर तिलंगे '51 25
महामानव लेनिन '44 27
छेदी जगन ! '54 29
लाल कमल '50 31
नोच रहे दहलीज खीझकर '50 32
अच्छा हुआ कि जनता को मिल गयी तुम्हारी थाह ! '61 34
खड़ी न होगी हम दोनों के बीच कभी दीवार '53 36
नौलखा हार '48 37
केसर की मासूम क्यारियों से आती आवाज '49 38
नाजियों के बाप '54 41
पंडित जी जाने वाले हैं रानी के दरबार में '53 42
अमलेन्दु एम० एल० ए० '54 44
चीलों की चली बरात '54 49
दिल्ली चलो ! '62 51
खड़ाऊ थी गद्दी पर '65 53
अन्न-पचीसी '74 54
चलो-चलो धरना दें चलकर '66 60

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उम्मीदवार '66	63
आखिर...इनसान हैं भाई मोरार जी '68	64
स्वगत-चिंतन कांग्रेसी आला कमान का '68	66
'फेस-टु फेस...' '68	67
वाह भई, मंडल '68	68
जी अकाल 'सहाय' '67	69
कोरस : चन्द विधायकों का '68	70
अब तक छिपे हुए थे उनके दाँत और नाखून '69	71
धूल चटाओ '69	73
दान दो ! दान दो !! '63	76
क्रांति तुम्हारी तुम्हें मुबारक '69	78
लाली बढ़ी सौ गुनी '64	81
त्रिमूर्ति '60	82
पुरानी जूतियों का कोरस '60	84
दिव्य चिन्तन '79	91
नये वर्ष की अगवानी में '76	92
मात्राएँ दीर्घ हैं... '78	94
सरकाऊ सीढ़ियाँ '69	96
सिन्धु नद '44	98
बहती है जीवन की धारा ! '41	104
बुलबुले '42	105
तब मैं तुम्हें भूल जाता हूँ '43	107
क्षमा प्रार्थना '44	109
अनुरोध '45	110
तारे '46	111
तरल कनक '62	112
सेंटिमेंट··· '76	113
कबन्ध '62	114
वह फिर जी उठी '66	115
लाएँ मीठे वचन कहाँ से '70	122
देवी, तुम तो काले धन की बैसाखी पर टिकी हुई हो '73	124
पैने दाँतों वाली '73	130
पता नहीं, दिल्ली की देवी गोरी है या काली '73	131
भला और क्या चाहिए '76	133

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोर न होगा...उल्लू होंगे ! '76	134
युग की चहल-पहल '77	136
उनके उर पर मोहन माला '77	137
नौ दिन चले अढ़ाई कोस '77	139
डेमोक्रेसी की डमी ! '78	141
दलबदलू बुजुर्ग '81	142
लोकतंत्र के दर्पण में '81	144
विकल हैं, व्याकुल हैं··· '81	146
बार-बार हुए हैं लहूलुहान··· '81	148
लोह गोपिकाएँ '81	149
छोटी मछली...बड़ी मछली '81	150
जान भर रहे हैं जंगल में '81	156
फसल '62	158
हेमन्ती बादल हैं '79	159
नदियाँ बदला ले ही लेंगी '80	160

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लो, देखो अपना चमत्कार !

अब तक भी हम हैं अस्त-व्यस्त
मुदित-मुख निगड़ित चरण-हस्त
उठ-उठकर भीतर से कण्ठों में
टकराता है हृदयोद्गार
आरती न सकते हैं उतार
युग को मुखरित करने वाले शब्दों के अनुपम शिल्पकार !
हे प्रेमचन्द
यह भूख-प्यास
सर्दी-गर्मी
अपमान-ग्लानि
नाना अभाव अभियोगों से यह नोक-झोंक
यह नाराजी
यह भोलापन
यह अपने को ठगने देना
यह गरज़ू होकर बाँह बेच देना सस्ते···
हे अग्रज, इनसे तुम भली-भाँति परिचित थे
मालूम तुम्हें था हम कैसे थोड़े में मुर्झा जाते हैं
खिल जाते हैं थोड़े में ही
था पता तुम्हें, कितना दुर्वह होता अक्षम के लिए भार
हे अन्तर्यामी, हे कथाकार
गोबर महगू बलचनमा और चतुरी चमार
सब छीन ले रहे स्वाधिकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे वढ़कर सब जूझ रहे
रहनुमा बन गये लाखों के
अपना त्रिशंकुपन छोड़ इन्हीं का साथ दे रहा मध्य वर्ग
तुम जला गये हो मशाल
बन गया आज वह ज्योति-स्तम्भ
कोने-कोने में बढ़ता ही जाता है किरनों का पसार
लो, देखो अपना चमत्कार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतना जल्दी भूल गया ?

कैसे यह सब तू इतना जल्दी भूल गया ?
ज़ालिम, क्यों मुझसे पहले तू ही झूल गया ?
आ, देख तो जा, तेरा यह अग्रज रोता है !
यम के फंदों में इतना क्या सचमुच आकर्षण होता है
कैसे यह सब तू इतना जल्दी भूल गया ?
ज़ालिम, क्यों मुझसे पहले तू ही झूल गया ?

ये खेत और खलिहान और वो अमराई
सारी कुदरत ही मानो गीली हो आई
तू छोड़ गया है इन्हें, उदासी में डूबे
धरती के कण-कण घुटे-घुटे डूबे-डूबे
आ, देख तो जा, ये सिर्फ उसासें भरते हैं
अड़हुल के पौधे हिलने तक से डरते हैं
ये खेत और खलिहान और वो अमराई
सारी कुदरत ही मानो निष्प्रभ हो आई
जालिम, क्यों मुझसे पहले तू ही झूल गया ?
कैसे यह सब तू इतना जल्दी भूल गया ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतेन्दु

सरल स्वभाव सदैव, सुधीजन संकटमोचन
व्यंग्य बाण के धनी, रूढ़ि-राच्छसी निसूदन
अपने युग की कला और संस्कृति के लोचन
फूँक गए हो पुतले-पुतले में नव-जीवन
हो गए जन्म के सौ बरस, तउ अंततः नवीन हो !
सुरपुरवासी हरिचंद जू, परम प्रबुद्ध प्रवीन हो !

दोनों हाथ उलीच संपदा बने दलीदर
सिंह, तुम्हारी चर्चा सुन चिढ़ते थे गीदर
धनिक वंश में जनम लिया, कुल कलुख धो गये
निज करनी-कथनी के बल भारतेन्दु हो गये
जो कुछ भी जब तुमने कहा, कहा बूझकर जानकर !
प्रियवर, जनमन के बन गये, जन-जन को गुरु मानकर !

बाहर निकले तोड़ दुर्ग दरबारीपन का
हुआ नहीं परिताप कभी फूंके कंचन का
राजा थे, बन गये रंक दुख बाँट जगत का
रत्तीभर भी मोह न था झूठी इज्जत का
चौंतीस साल की आयु पा, चिरजीवी तुम हो गये !
कर सदुपयोग धन-मान का, वर्ग-दोष निज धो गये !

अभिमानी के नगद दमाद, सुजन जन-प्यारे
दुष्टों को तो शर तुमने कस-कस के मारे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आफिसरों की नुक्ताचीनी करने वाले
जड़ न सका कोई भी तेरे मुँह पर ताले
तुम सत्य प्रकट करते रहे बिना झिझक बिना सोचना
हमने सीखी अब तक नहीं तुलित तीव्र आलोचना

सर्व-सधारन जनता थी आँखों का तारा
उच्चवर्ग तक सीमित था भारत न तुम्हारा
हिन्दी की है असली रीढ़ गँवारू बोली
यह उत्तम भावना तुम्हीं ने हम में घोली
बहुजन हित में ही दी लगा, तुमने निज प्रतिभा प्रखर।
हे सरल लोक साहित्य के निर्माता पण्डित प्रवर !

हे जनकवि सिरमौरसहज भाखा लिखवइया
तुम्हें नहीं पहचान सकेंगे बाबू-भइया
तुम सी जिंदादिली कहाँ से वे लावेंगे
कहाँ तुम्हारी सूझ-बूझ वे सब पावेंगे
उनकी तो है बस एक रट : भाषा संस्कृतनिष्ठ हो !
तुम अनुक्रमणिका ही लिखो यदपि अतिसुगम लिस्टहो !

जिन पर तुम थूका करते थे साँझ-सकारे
उन्हें आजकल प्यार कर रहे प्रभू हमारे
भाव उन्हीं का, ढब उनका, उनकी ही बोली
दिल्ली के देवता फिरंगिन के हमजोली
सुनना ही पन्द्रह साल तक अंग्रेजी बकवास है
तन भर अजाद हरिचंद जू, मन गोरन कौ दास है

कामनवेल्थी महाभँवर में फँसी बेचारी
बिलख रही है रह-रह भारतमाता प्यारी
यह अशोक का चक्र, इसे क्या देगा धोखा
एक-एक कर लेगी सबका लेखा जोखा
जब व्यक्ति-व्यक्ति के चित्त से मिट जाएगी दीनता
माँ हुलसेगी खुलकर तभी लख अपनी स्वाधीनता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूइ सेर कंकड़ पिसता फी मन पिसान में
घुस बइठा है कलिजुग राशन की दुकान में
लगती है कन्ट्रोल कभी, फिर खुल जाती है
कपड़ों पर से पहली कीमत धुल जाती है
बनिए तो यही मना रहे; विश्व युद्ध फिर हो शुरू
फिर लखपति कोटीश्वर बने; कुछ चेहरे हों सुर्खरू !

गया यूनियन जैक, तिरंगे के दिन आये
चालाकों ने खद्दर के कपड़े बनवाये
टोप झुका टोपी की इज्जत बढ़ी सौगुनी
माल मारती नेतन की औलाद औगुनी
हम जैसे तुक्कड़ राति-दिन कलम रगड़ि मर जायँगे
तो भी शायद ही पेट भर अन्न कदाचित पायँगे

वही रंग है वही ढंग है वही चाल है
वही सूझ है वही समझ है वही हाल है
बुद्धिवाद पर दंडनीति शासन करती है
मूच्छित हैं हल बैल और भूखी धरती है
इस आजादी का क्या करें बिना भूमि के खेतिहर ?
हो असर भला किस बात का बिन बोनस मजदूर पर ?

लाटवाट का पता नहीं अब प्रेसिडेंट है
अपने ही बाबू भइया की गवर्मेंट है
चावल रुपये सेर, सेर ही भाजी भाजा
नगरी है अंधेर और चौपट है राजा
एक जोंक वर्ग को छोड़ कर सब पर स्याही छा रही
दुर्दशा देखकर देश की याद तुम्हारी आ रही

बड़े-बड़े गुनमंत धँस रहे प्रगट पंक में
महाशंख अब बदल गए हैं हड़ा शंख में
प्रजातंत्र में बुरा हाल है काम काज का
निकल रहा है रोज जनाजा रामराज का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय भारतेन्दु बाबू कहो, चुप रहते किस भाँति तुम
हैं चले जा रहे सूखते बिना खिले ही जब कुसुम ?

प्रभुपद पूजैं पहिरि-पहिरि जो उजली खादी
वे ही पा सकते स्वतंत्रता की परसादी
हम तो भल्हू देस दसा के पीछे पागल
महँगी — बाढ़ — महामारी मइया के छागल
है शहर जहल-दामुल सरिस निपट नरक सम गाँव है
अति कस्ट अन्न का वस्त्र का नहीं ठौर ना ठाँव है

पेट काट कर सूट-बूट की लाज निवाहैं
पिन से खोदैं दाँत, बचावैं कहीं निगाहैं
दिल दिमाग का सत निचोड़ कर होम कर रहे
पढ़ुआ बाबू दफ्तर में बेमौत मर रहे
अति महँगाई के कारण जीना जिन्हें हराम है
उनकी दुर्गत का क्या कहूँ जिनका मालिक राम है

संपादकगन बेबस करै गुमस्तागीरी
जदपि पेट भर खायँ न बस फाँकैं पंनजीरी
बढ़ा-चढ़ा तउ अखबारन का कारवार है
पाँती-पाँती में पूँजीवादी प्रचार है
क्या तुमने सीचा था कभी; काले-गोरे प्रेसपति
भोले पाठक समुदाय की हर लेंगे मति और गति

अंडा देती है सिनेट की छत पर चींटी
ढूह ईंट-पत्थर की, कह लो यूनिवर्सीटी
तिमिर-तोम से जूझ रहा मानव का पौधा
ज्ञान-दान भी आज बन गया कौरी सौदा
हे भारतेन्दु, तुम ही कहो, संकट को कैसे तरे ?
औसत दर्जे के बाप को कुछ न सूझता क्या करे ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टके-टके बिक रहा जहाँ पर गीतकार है
बाकी सिरिफ सिनेमाघर में जहाँ प्यार है
कवि विरक्त बन फाँकि रहे चित चैतन चूरन
शिक्षक को भूखा रखता परमातम पूरन
अब वहाँ रोष है रंज है, जहाँ नेह सरिता बही
लो-प्रेम जोगनी आजकल अन्न-जोगनी हो रही

दीन दुखी मैं लिए चार प्रानिन की चिंता
बेबस सुनता महाकाल की धा धा धिनता
रीते हाथों से कैसे मैं भगति जताऊँ
किस प्रकार मैं अपने हिय का दरद बताऊँ
लो आज तुम्हारी याद में लेता हूँ मैं यह सपथ
अपने को वेचूँगा नहीं चाहे दुख झेलूँ अकथ

मैं न अकेला, कोटि-कोटि हैं मुझ जैसे तो
सबको ही अपना-अपना दुख है वैसे तो
पर दुनिया को नरक नहीं रहने देंगे हम
कर परास्त छलियों को, अमृत छीनेंगे हम
सब परेशान हैं, तंग हैं, सभी आज नाराज हैं
हे भारतेन्दु तुम जान लो, विद्रोही सब आज हैं

जय फक्कड़ सिरताज, जयति हिंदी निर्माता !
जय कवि-कुल गुरु ! जयति जयति चेतना प्रदाता !
क्लेश और संघर्ष छोड़ दिखलावें क्या छवि—
दीन दुखी दुर्बल दरिद्र हम भारत के कवि !
जो बना निवेदन कर दिया, काँटे थे कुछ, थूल कुछ !
नीरस कवि ने अर्पित किए लो श्रद्धा के फूल कुछ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा किया तुमने

भगतसिंह,
गुजर गये तुम्हारी शहादत के
वर्ष पचास
मगर बहुजन समाज की
अब तक पूरी हुई न आस
तुमने किनका भला चाहा था
तुमने किनका संग-साथ निवाहा था
क्या वे यही लोग थे—
गद्दार, जनद्वेषी अहसान फरामोश ?
हकूमत की पीनक में बदहोश ?
क्या वे यही लोग थे,
तुमने इन्हीं का भला चाहा था ?
भगतसिंह,
तुम्हारे वे कामरेड क्या लुच्चे थे, लबार थे ?
इन्हीं की तरह क्या वे आप पब्लिक की गर्दन पे सवार थे ?
अपनी कुर्सी बचाने की खातिर
अपनो जान माल की हिफाजत में
क्या तुम्हारे कामरेड
इन्हीं की तरह
कातिलों से समझौता करते ?
क्या वे इन्हीं की तरह
अपना थूक चाट-चाट कर मरते ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमने तुम्हारी वर्षगाँठ को भी
धंधा बना लिया है, भगतसिंह
हमने तुम्हारी प्रतिमा को भी
कुर्बानी का प्रमाण पत्र थामे रहने के लिए
भली भाँति मना लिया है !
भगतसिंह, दर-असल, हम बड़े पाजी हैं
तुम्हारी यादों के एक-एक निशान
हम तानाशाहों के हाथ बेचने को राजी हैं
दस-पाँच ही बुजुर्ग शेष बचे हैं
वे तुम्हारे नाम का कीर्तन करते हुए
यहाँ वहाँ दिखाई दे जाते हैं
वे उनके साथ शहीद स्मारक
समारोहों में अगल-बगल मंचस्थ
होते हैं उन्हीं के साथ
जिनकी जेलों के अन्दर हजार-हजार
तरुण विप्लवी नरक यातना भोग रहे हैं
और वे उनके साथ भी
शहीद-स्मारक-समारोहों में अगल-बगल
मंचस्थ होते हैं
जिनकी फैक्टरियों के अन्दर-बाहर
श्रमिकों का निरंतर बध होता है
भगतसिंह, क्या वे सचमुच तुम्हारे साथी थे ?
नहीं, नहीं, प्यारे भगतसिंह, यह झूठ है !
ऐसा हो नहीं सकता
कि तुम्हारा कोई साथी इन
मिनिस्टरों से, इन धनकुबेरों से
हाथ मिलाये !
दरअसल वे कोई और लोग हैं
उनकी जर्जर काया के अन्दर
निश्चय ही देशद्रोही-जनद्रोही
दुष्टात्मा प्रवेश कर गई है
भगतसिंह, अच्छा हुआ तुम न रहे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा हुआ, फाँसी के फन्दे पर झूल गये तुम
ठीक वक्त पर शहीद हो गये,
अच्छा किया तुमने
बहोऽऽत अच्छा ! बहोऽऽत अच्छा !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पटनायक नागभूषण

मृत्युंजय महा-वीर
पटनायक नागभूषण
अक्षय-अमोघ ऊर्जा के
आकर तुम !
साहस के सागर तुम !
मृत्युंजय परम वीर
महाप्राण, कृशातिकृश शरीर !
पटनायक नागभूषण !!
अप्रतिम सखा हो तुम
विश्व सर्वहारा के !
प्रतीक हो सुबह की तारा के !
पटनायक नागभूषण—

"रह न जाए कोई निपीड़ित-प्रपीड़ित
"इस धराधाम में
"अन्न-वस्त्र-पूरित, हमेशा चौकस
"मगन रहें सभी निज-निज काम में
"सुलभ रहें सबको स्वगत श्रम-फल
"रह जाए कोई नहीं व्याकुल-विकल
"परस्पर सभी हो निश्छल
"पैशाचिक प्रतिस्पर्द्धा से दूर
"सभी करें शान्ति की उपासना भरपूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—यही तो कुछ बातें थीं, जो तुम कहते रहे हो ?
—इसीलिए क्या
तानाशाही जोर-जुलुम सहते रहे हो ?
भगतसिंह, आजाद चन्द्रशेखर, बाघा जतीन...
उनकी अगली कड़ी नहीं हो क्या तुम ?
इतिहास की काली-टेढ़ी गुफाओं के अन्दर
गूँज-अनुगूँज भरी चैलेंज नहीं हो क्या तुम ?

जभी तो वे घबराते हैं
अनसुनी करते हैं तुम्हारी रिहाई की अपीलें
तुम्हारी चर्चा तक से कतराते हैं
अमन के सफेद कबूतरों की जगह
अपने आसमान में छोड़ते हैं वे
हजार-हजार लाख-लाख भूरी चीलें
अनसुनी करते हैं तुम्हारी रिहाई की अपीलें
और क्या, यही तो वे कर सकते हैं ?
अपनी लोकसभा के अन्दर
अपनी पर-लोक सभा के अन्दर
उनके 'श्रीमुख' कभी क्या थकते हैं !
उनके प्रचार यंत्र कभी क्या रुकते हैं !
मक्कार हैं वे, शत-प्रतिशत फरेबी,
बापू की समाधि के समक्ष नाहक ही झुकते हैं !
जभी तो हमें हँसी आती है...
जभी तो हमें रुलाई आती है...

साथी पटनायक नागभूषण
छै मंजिली इमारत के अपने उस अस्पताली बेड पर
यानी AIMI वाली
शर-शय्या पर
निभृत-विजन-एकान्त कोठरी में
तुम भी तो कभी-कभी
मुस्कुरा उठते हो !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहें भरते हो
कभी-कभी !
शासक-जमात की बेवकूफियों पर
सर्वहारा के भोलेपन पर !
साथी पटनायक नागभूषण
है न यही बात ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथी गणपति

साथी गणपति,
हम न तुम्हारे हत्यारों को क्षमा करेंगे
बन्धु, तुम्हारा लहू मिला है जिस पानी में
वह प्रशान्त सागर गीधों के सर्द खून से
काला होगा, काला होगा
बन्धु, तुम्हारा रक्त गिरा है जिस धरती पर
मुक्ति फौज की गुरु-गभीर-दृढ़ चरण-चाप से
उसका आँचल—
भूरा होगा, भूरा होगा
बन्धु, तुम्हारे शोणित सीकर में
जिस समीर में उड़े वो हवा
आँधी बनकर कर देगी निर्मूल
साम्राजी पीपल की इन खोखली जड़ों को
बन्धु, तुम्हारा वो अद्‌भुत बलिदान
जनयुग की खातिर साबित होगा बढ़ता दिनमान

पूरब-पश्चिम के गीधों की छिप न सकी यह साजिश
—सारी दुनिया के आकाश को नोच-नोच खाने की साजिश
—मिटते-मिटते और नहीं तो दो छन टिक जाने की साजिश
—अमन चैन की दीवारों से ईंटें खिसकाने की साजिश
—जनवादी मुल्कों पर जंगी बादल बरसाने की साजिश
—पढ़े-लिखों भूले-भटकों को फिर-फिर भरमाने की साजिश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारी साजिश आज हो गई हाजिर
साथी गणपति
इस धरती का, उस धरती का
एक-एक कन मुग्दर बनकर
गीधों की खूँखार चोंच पर बरस रहा है
आज वहाँ, कल यहाँ कि परसों कहीं और—
इनकी लाशों का ढेर तैरता दीख पड़ेगा
थूकों की निर्बंध नदी में
साथी गणपति,
हम न तुम्हारे हत्यारों को क्षमा करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फाँसी की सजा पाए हुए...बारह वीर तिलंगे

यदि तुम्हें फाँसी पड़ी तो कलंकित होगा समूचा राष्ट्र
मुँह कैसे दिखायेंगे कहीं पर राष्ट्रवादी ?
क्या कहेंगे विश्व की श्रमशील जनता से ?
यदि तुम्हें फाँसी पड़ी तो—
असंभव हो जाएगा वाजिब हकों के वास्ते संघर्ष करना
असंभव हो जाएगा फिर आततायी दानवों के जुल्म का
प्रतिरोध करना
असंभव हो जाएगा जागीरदारी-जमींदारी साजिशों का
फाश करना
असंभव हो जाएगा दुर्दान्त नौकरशाह थानेदार की
उन मुजरिमाना हरकतों से मुक्ति पाना
यदि तुम्हें फाँसी पड़ी तो
त्याग-तप-बलिदान की धारा निरर्थक सिद्ध होगी
यदि तुम्हें फाँसी पड़ी तो
नागरिकता की जड़ों पर ही कुठाराघात होंगे
यदि तुम्हें फाँसी पड़ी तो
निरपराध अबोध बच्चे
हम सयानों की अकारण क्रूरता पर क्या कहेंगे
यदि तुम्हें फाँसी पड़ी तो क्या कहेंगे फिर हमारे राष्ट्रपति या
प्रमुख मंत्री
विश्व की श्रमशील जनता से ?
झूलने देंगे नहीं हम तुम्हें फाँसी पर—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेल में सड़ने नहीं देंगे तुम्हें हम—
सजा के उस एकतर्फा फैसले को बदलवा कर ही रहेंगे—
हे तिलंगे वीर बारह, तुम्हारे ये प्राण हैं अनमोल
इनका अन्त हम होने न देंगे—

कोटि कंठों का निषेधी स्वर सुनाई दे रहा है;
मुझे आशा ही नहीं विश्वास है दृढ़ :
बाध्य होकर सुनेंगे समवेत स्वर शासक
खुलेगा फिर केस जिसमें सफाई तुम दे सकोगे
न्याय होगा—न्याय का नाटक न होगा
बारहों तुम फिर हमारे बीच जल्दी लौट आओगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामानव लेनिन

महामानव लेनिन !
तुम्हीं ने यह दिन
हमें दिखलाया;
वह मन्त्र सिखलाया
कि हम छाती ताने
कल कारखाने
आप ही बनाते,
आप ही चलाते;
लाल गीत गाते
लाल झण्डा फहराते
करते हैं काम
लेते हैं विश्राम
तन-मन लगाकर
मथते हैं सागर
अमृत निकाल कर
पीते हैं ढाल-ढालकर
स्वयं उत्पादक
स्वयं हम विभाजक
धन्य, हमें दिखलाया
तुम्हीं ने यह दिन
महामानव लेनिन !
क्रान्ति के अवतार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संमिलित हुंकार—
कोटि-कोटि जन के !
साथी मरण के
साथी जीवन के !
तुम्हारी परिकल्पित
तुम्हारी आयोजित
सोवियत धरणी
इच्छापूर्ति करणी
श्रमिक कृषक दल की
खान जन बल की
संघबद्ध स्वाधीन
लोग जहाँ वर्गहीन
कहीं किसी कोने में
जहाँ पैदा होने में
नहीं डर पिछड़ने का
पड़े-पड़े सड़ने का
जहाँ के विकसित लोग
प्रतिभा का दुरुपयोग
होने नहीं देते
चट परख लेते—
होनहार कोंपल को
कीचड़ के कमल को !
बुझने न पाती
प्रतिभा की बाती
स्नेह के अभाव में
उपेक्षा के दुराव में ।
धन्य वह संसार
क्रान्ति के अवतार !
महामानव लेनिन !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छेदी जगन !

लोकहित-व्रत में मगन,
छेदी जगन ! छेदी जगन !
तुम से सुवासित है अवनि
तुम से विभासित है गगन
छेदी जगन ! छेदी जगन !
उपनिवेशी दासता के पंक की तह छेद कर तुम
कमल जैसे खिल रहे हो !
मुक्तिकामी विश्व की जनशक्तियों में मिल रहे हो !
कर दिया हैं ब्रिटिश दानव को नगन !
छेदी जगन ! छेदी जगन !
अफ्रिका में, मलाया में, अरब में, ईरान में
मिस्र, बर्मा, हिंद, पाकिस्तान में
श्राद्ध होने जा रहा है अब बिट्रिश साम्राज्य का
चचा चर्चिल का बढ़ा सर-दर्द
कामनवेल्थ की माया न आती काम
क्षुब्ध जन-मन कभी रानी का न लेता नाम
उपनिवेशों में छिड़ा स्वाधीनता-संग्राम
ब्रिटिश महलों में मचा कुहराम
मित्र, तुम आगे बढ़ो
आप अपने देश की किस्मत गढ़ो
दे रहीं आशीष तुमको
दिवस की भास्वर दिशाएँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निशा के नक्षत्र गण
छेदी जगन ! छेदी जगन !!
अन्त तक देंगे तुम्हारा साथ हम
नहीं यों ही नवाते हैं माथ हम
हिन्दवासी-जनगणों का प्यार लो !
विषमता के प्रति घृणा का अनोखा उपहार लो !
विश्व मानव के लिए मनुहार लो !
दो हमें भी जरा अपना ओज, दो अपनी लगन !
मित्रवर प्रिय बनें हम, बन्धुवर छेदी जगन !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल कमल

खिल गये चीन की धरती-तल पर लाल कमल
आ रहा हिमालय-पार यहाँ उनका परिमल
शंकित वह वृक्षों की इस कम्पित छाया में
हर्षाकुल है सूखी दूबों का अन्तस्तल

दिन-दिन निष्प्रभ होता जाता तक्षक-मंडल
स्वर्णाभ गरुड़ से उद्भासित है उदयाचल
धो रहा प्रतीची की आँखों का कटु काजल
एशियाद्वीप का दीपित दक्षिण-पूर्वांचल

खा रहा मात फिर, फिर से नरमेधी दावानल
होती जाती है जगह-जगह जनशक्ति प्रबल
अब की प्रशान्त सागर का अद्भुत बड़वानल
देगा लक्ष्मी-नारायण का भी रूप बदल

कैसा अच्छा लगता है भास्वर व्योम पटल
प्राची-पथ में बालार्क-सुभग सुन्दर उज्ज्वल
जन-जीवन से जायेगी जलन जरूर निकल
रजताभ भूमि पर उगी स्वर्ण शोणाभ फसल

मच गई स्वर्ण अमरीका में भारी हलचल
चिन्तित कुबेर के दल-बल अब हो उठे विकल
खिल गये चीन की धरती-तल पर लाल कमल
आ रहा हिमालय-पार यहाँ उनका परिमल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नोच रहे दहलीज खीझकर

रातोंरात किया था हमला, भारी मुँह की खाई,
नोच रहे दहलीज खीझकर, बिल्ली के ये भाई !

पड़ी करारी चोट, दुष्ट की मरी जा रही नानी,
खूँखारों को नहीं मिल रहा, कहीं बूँद भर पानी।
शह पड़ती है चाल चाल पर भागत बाट न सूझै,
धरती के बेटों से कैसे लँगड़ी पल्टन जूझै।
उखड़े कदम के दुनिया टूटी, फिर भी अकिल न आई,
नोच रहे दहलीज खीझकर, बिल्ली के ये भाई !

हिन्द मुलुक के डाक्टर दौड़े करने मलहम-पट्टी,
जर्नल कै करता, कर्नल को रह-रह आती टट्टी।
सुनो साथियो, कान लगाकर मेकार्थर की धड़कन,
घर में टेबुल पीट रहे हैं टुरूमैन-एचीसन !
जोश देख कोरिया मुलुक का, मति इनकी बौराई,
नोच रहे दहलीज खीझकर बिल्ली के ये भाई !

उठा कोरिया, बढ़ा कोरिया, जाग रहा जापान,
उछल कूद ले दो दिनों का यह मेकार्थर-मेहमान।
जीवट की बलिहारी भैया, किया शत्रु का नाश,
छोटा मुलुक कोरिया, भइया, उसको है शाबाश।
टुरूमैन का आँसू पोंछे प्रजातन्त्र की धाई,
नोच रहे दहलीज खीझकर बिल्ली के ये भाई !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी छछूनर एक हो गए, गड़ा दिए हैं दांत,
दहशत के मारे दुष्टों की ऐंठ रही है आँत।
अन्दर संकट बाहर संकट, फटा जा रहा पेट,
छिपा न पाते हैं बेचैनी अब अमरीकी सेठ।
नहीं दीखती खैर सब जगह छेड़े बिना लड़ाई,
नोच रहे दहलीज खीझकर, बिल्ली के ये भाई!

जो मारता अमरीकी हिटलर का दासो दास,
सिंगमनरी को यू० एन० ओ० से बहुत बड़ी है आस।
ऊपर जोश, रुलाई अन्दर, लेकर टूटी टाँग,
पीट रहा है फ़ारमूसा में फूटा ढोल चियांग।
थर-थर काँपै हिन्द चीन का राजा बाओ दाई,
नोच रहे दहलीज खीझकर बिल्ली के ये भाई!

रातोंरात किया था हमला, भारी मुँह की खाई,
हुई बुरी गत, खीझ रहे अब बिल्ली के ये भाई!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा हुआ कि जनता को मिल गई तुम्हारी थाह !

राणाशाही के जूठन ! ओ दुर्मद तानाशाह !
अच्छा हुआ कि जनता को मिल गई तुम्हारी थाह !
हमें पता है, किस के बल पर यों तुम कूद रहे हो !
हमें पता है, किस फोड़े से यों तुम फूट वहे हो !
पत्थर दिल वह पशुपति तुमको बचा नहीं पाएगा !
नियति नटी से ब्याह तुम्हारा रचा नहीं पाएगा !
नेपाली मिट्टी का कण-कण ललकारेगा तुमको !
आज भले संगीनों से कुचलो कुसुम-कुसुम को !
दुनिया भर की जनता तुम पर लाख बार थूकेगी !
फिर-फिर भंडाफोड़ करेगी, कभी नहीं चूकेगी !
सीटो नाटो कभी तुम्हारे काम नहीं आएँगे !
छत्र-मुकुट-सिंहासन सारे रौंद दिये जाएँगे !

कब तक तुम यों प्रजातंत्र का भुर्ता चखा करोगे ?
कब तक तुम यों जयचन्दों को चाकर रखा करोगे ?
कब तक अपनी आँखों पर डालोगे चश्मा काला ?
कब तक हाजत में गुमसुम यों बैठेगा कोइराला ?
कब तक वो चुपचाप रहेगा मनमोहन अधिकारी ?
कब तक लाखों नेपाली भुगतेंगे यों लाचारी ?
खबरदार ओ राजा, बस कर हाथ हटा ले अपने।
कभी नहीं पूरे होंगे तानाशाही के सपने।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी जनता का गुस्सा तू इतनी जल्दी भूला ?
कौन डाल है ? किन रस्सों पर टँगा हुआ हैं झूला ?
जिन धूर्तों ने कान फूँक कर यह सब करवाया है,
काश्मीर-कोरिया बँट गये, उनकी ही माया है !
खबरदार ओ राजा, कल या परसों तू भागेगा !
अँगड़ाई लेकर धरती का बेटा अब जागेगा !

राणाशाही के जूठन, ओ दुर्मद तानाशाह !
अच्छा हुआ कि जनता को मिल गई तुम्हारी थाह !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ी न होगी हम दोनों के बीच कभी दीवार

घुटनों के बल रेंग रहे हम, खड़े ही गये तुम तो
करवट बदल रही है दुनिया, बड़े हो गये तुम तो
जन-बल के कोड़े खाकर, सुनकर जग की फटकार
झाड़ी झुरमुट में फन काढ़े नाग रहे फुफकार
धन्य-धन्य हो गई धरित्री, तुम जो यहाँ पधारे
हम भी आगे आयें प्रियवर पकड़ो हाथ हमारे

शिथिल न होने पायेगा यह स्नेह सूत्र का बन्धन
बार-बार आओगे, होगा बार-बार अभिनन्दन
खड़ी न होगी हम दोनों के बीच कभी दीवार
विश्व करेगा हिन्द-चीन मैत्री की जय जयकार
यह सब देख-देख दुष्टों का माथा चकरायेगा
मुँह की ही खायेगा जो भी हम से टकरायेगा

हम दोनों का प्रेम अमर है, अविचल भाईचारा
विश्व-शांति है टेक हमारी, जनहित लक्ष्य हमारा
सब स्वतंत्र हों, सभी सुखी हों, सब का हो कल्याण
व्यक्ति-व्यक्ति में संचारित हो, नव जीवन, नव प्राण
गाँव-गाँव यह, नगर-नगर यह, गढ़ हो मानवता का
नील गगन में फहराये तब रह-रह नील पताका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौलखा हार

खेलें खायें आबाद रहे हैदराबाद के रजाकार···
तिनरंगी किरनें जाँनिसार—
रिजवी की मुड़ी हुई दाढ़ी के गंगा-जमनी बालों पर
तिनरंगी किरनें जाँनिसार !!
आकाश मार्ग से उड़-उड़कर
जाते हैं दिल्ली के देवदूत
तब आसफजाही महलों की
उन रजत छतों पर होता है राका विहार
खादी के सूतों की माला बन जाती है नौलखा हार !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केसर की मासूम क्यारियों से आती आवाज

डिनर नई दिल्ली में और करार्ची में कर लंच;
तौल रहे रावलपिंडी में लड्डू बन्दर पंच !

क्या होने वाला है भैया, सबका ध्यान लगा है,
समझो हरीसिंह के दिल में नेकी या कि दगा है !

शालीमार निशात बाग को ले लेगा अमरीका;
भैया, इनको जम्मू भर का दे देगा वह ठीका !

रात-रात भर अब्दुल्ला को नींद नहीं आती है !
भारी दुबिधा है, झेलम भी चक्कर ही खाती है !

कमर झुकाए नजर गड़ाये कश्मीरी कारीगर,
टाँक रहे हैं फूल-पत्तियाँ पश्मीनी शालों पर !

काश्मीर पर कश्मीरी जनता का होगा राज—
केसर की मासूम क्यारियों से आती आवाज !

कड़म शालियाँ लहरातीं, करतीं युग की जयकार,
दुश्मन को ललकार रहे हैं खड़े सफेद चिनार !

आज नहीं तो भागेंगे अजी, डोगराशाह !
लाख-लाख परजा के आगे क्या सूझेगी राह !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमरीकी वन्दर पंचो की खुल जायेगी पोल,
काशमीर में बजा करेंगे काशमीर के ढोल !

× × ×

नहीं तुम्हारा नहीं हमारा कशमीर जनता का है काशमीर !
जोड़ नहीं सकता अब कोई हरिसिंह की यह फूटी तकदीर !

सोच नहीं सकता है ज्यादा, सठियाया अबकलका बागी शेख !
धरती परसे नजर उठ गई, आसमानको रहा रात-दिन देख !

सिरीनगर जम्मू, ऊधमपुर गिल्गित वो लद्दाखं—
दूर-दूर तक फैले हैं जी, काशमीर के शाख !

बोलो भाई कितने टुकड़े होंगे सुरगपुरी के ?
निकल रहे हैं बटवारे के कैसे तौर-तरीके !

इन्हें मिलेगा कुछ, कुछ उनको, सर ले लेगा पंच,
आज नहीं तो कल मालूम होगा सारा परपंच !

गिल्गित के अड्डे पर अब अमरीकी कुत्ता भूकेगा !
काशमीर का बच्चा-बच्चा अब इन पर थूकेगा !

× × ×

काश्मीरी ही काश्मीर का कर सकते उद्धार,
भैया यह तो कर डालेंगे उसका बंटाढार !

हिन्दुस्तानी पाकिस्तानी दोनों जग से न्यारा—
नई तरह का काश्मीर हो, यही हमारा नारा !

कै दिन तक टिक पायेगी यह सड़ी डोगराशाही ?
कै दिन तक यह सितम ढाएँगे जारों के हमराही ?

पहले से ही ठुकी हुई हैं नीचे सौ-सौ कीलें !
ऊपर-ऊपर मँडराती हैं गोरी काली चीलें !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो पाटों के बीच घुट रहे काशमीर के प्राण—
कौन दूसरा दे सकता है उसको जीवनदान !

काश्मीरी ही काश्मीर का कर सकते उद्धार !
भैया, आप करेगी जनता अपना बेड़ा पार !

× × ×

मात खाएँगे हिन्दी पंडित, पाकिस्तानी पीर—
लो देखो, वह खड़ा हो रहा नया-नया कश्मीर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाजियों के बाप

नाजियों के बाप !
जी हाँ, आप !
गोलियाँ चलवा चुके, अब नेहरू का रुख रहे हैं नाप !
क्षुब्ध जनता दे रही है श्राप !
पर, न डर से सही खबरें प्रेस पाते छाप !
अजी सुनिए, रक्तरंजित क्रान्ति की पद चाप !
चाटकर चटनी अमन की, पचा पाएगी पुलिस क्या पाप ?
खून दीनानाथ का हम देखते ही रहेंगे चुपचाप ?
रंग लाएगा न क्या कुछ हमारा सन्ताप ?
कीजिए बस आप !
मत बकिए अनाप-शनाप !
प्रभु हमारे ! नाजियों के बाप !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित जी जाने वाले हैं रानी के दरबार में

जय बोलो जी, जय बोलो जी, वीर जवाहर लाल की
लंदन में ढोयेंगे पंडित जी रानी की पालकी
सबसे भारी खूबी होगी, वह सन् तिरपन साल की
बलिहारी इस राम राज की ! बलिहारी कलि काल की
जय बोलो जी, जय बोलो जी, वीर जवाहर लाल की

रत्ती भर भी नहीं लगेगा बट्टा शाही शान में
मरे पटापट लोग भूख से चाहे हिन्दुस्तान में
गोल मेज पर बातें होंगी नेहरू और मलान में
सब मिलकर धूनी लगायेंगे वर्तानवी मचान में
रत्ती भर भी नहीं लगेगा बट्टा शाही शान में

कटे मलाया के जंगल में, गुरखों का क्या मोल है
चर्चिल के लेखे आदम का खून मजे का झोल है
रुके नहीं नरमेध, यही तो रामराज का रोल है
भारत माँ के चरनामृत में कामनवेल्थी घोल है
कटे मलाया के जंगल में, गुरखों का क्या मोल है

रानी देगी दुआ भले इस सड़ी गली सरकार को
चर्चिल खूब सराहेगा इस पंचसाला पंसार को
बड़े बोल से पाट रहे ये संकट की मझधार को
खुद ही खुश हैं देख देखकर सनदों के अंबार को
रानी देगी दुआ भले इस सड़ी गली सरकार को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कभी-कभी मुंह खोला करते अमन चैन के नाम पर
भिजवाते चुपके-चुपके गुरखे बकरों को लाम पर
बड़े बड़ों पर नजर, सीख की छड़ियाँ सिर्फ अवाम पर
शानों शौकत बनी रहे, यह जोर न देंगे काम पर
कभी-कभी मुँह खोला करते अमन चैन के नाम पर

कामनवेल्थी दुनिया क्या है, बूचड़ का बाजार है
प्रजातन्त्र पर्दा है पर खूनी कारोबार है
चर्चिल-ईडन-अटली बीवन···पूरा गूट खूँखार है
पग-पग पर आजाद हिन्द भी उनका बरखुर्दार है
कामनवेल्थी दुनिया क्या है, बूचड़ का बाजार है

पंडित जी जाने वाले हैं रानी के दरबार में
अपने ही हाथों गूँथेंगे मोती उसके हार में
मनमानी डूबकी लगाएँगे वहाँ टेम्स की धार में
दिल दिमाग को पेश करेंगे अबकी वह उपहार में
पंडित जी जाने वाले हैं रानी के दरबार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमलेन्दु एम० एल० ए०

उठायी गर्दन, खाँस कर गला किया साफ
और ग़ौर से देखा जन-समुदाय की ओर
और इस प्रकार
अपने आप में भर लिया यथेष्ट चमत्कार
स्थूल ग्रीवा मस्तक हिला नहीं बिलकुल
निहित था दृगों में अजीब-सा गहरापन
पूछा अमलेन्दु जी ने उपस्थित जनों से
अहेतुक प्रश्न भी हो उठा हेतुमान
पूछ ही बैठे जब अजबलाल सिंह श्रीमान्
छोटे-मोटे बबुआन 'अमलेन्दु' उपनाम धारी
माननीय एम० एल० ए०, शासकों के वर्ग सहकारी
स्थूल तनु, सूक्ष्ममति, गम्भीर और शान्त अति
आरम्भ हुआ प्रवचन, सहज मंथर गति से
चल पड़ी बाबू साहेब की जीभ
लोग लगे सुनने—
पाथकर कान, फाड़कर नेत्र
मन को थमाकर बुद्धि का क्षेत्र !
रात का वक्त था, बज रहे थे ग्यारह
भागलपुर शहर की पूर्वोक्त गोष्ठी का
नाम था 'मकरंद', उम्र थी अभी सवा साल की
बैठते थे लोग महीने में दो बार
गायक, वादक, कवि, कथाकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहृदय-तरुण-अधेड़-बुज़ुर्ग...

आज अमलेन्दु जी के सम्मान में
गोष्ठी हुई थी आहूत
पधारे थे सानुकंप संस्कृति के आप अग्रदूत
बाँसुरी पर चला 'यमन कल्याण'
बेला पर बिछ गया बेसुध 'मालकोश'
दाहिने और बायें हाथ की बीच वाली तीनों उँगलियाँ
तबला और डुग्गी पर
नचा गयीं जाने किस-किस राग को !
तदन्तर कविताएँ सुनी गयीं
और अब श्रीमान् अमलेन्दु जी
कर रहे थे प्रकट अपने विचार
और फिर पकड़ना भी तो था उन्हें
दानापुर-फास्ट पैसेंजर ठीक साढ़े बारह की
अहल भोर पहुँचना था पटना
बजानी थी हाजिरी विधान सभा की अपनी !
सहज थी भंगिमा, स्वर थे आवेश शून्य
झर रही थी शब्दों से मानो शालीनता
बोलते चले गये श्रीमान् अमलेन्दु जी :
"सभापति जी, मित्रो, हो तो गयी देर किन्तु
आपका अनुरोध भला कैसे नहीं मानूँ
सर्वप्रथम कलाकारों को धन्यवाद
विशेषतः तबलावादक तरुण को
निःसन्देह भविष्य उज्ज्वल है उनका।
बन्धुओ, दीजिए न आने
राजनीतिक कालुष्य साहित्य के भीतर
स्वयं भले गरलपान कीजिए
समाज को परंच अमृत ही दीजिए
बनी रहे युगों तक—
संगीत और ललित कला के प्रति
आपकी यह अविचल निष्ठा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपनिषद में आया है एक वाक्य—
न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः
और भारत की अपनी परम्परा में सभी कुछ तो है हो
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—क्या भला नहीं है यहाँ ?
फिर केवल अर्थ या काम पर जो लोग देते हैं जोर
ध्यान मत दीजिए आप उनकी ओर
कौन सुनेगा भला बकवास उनकी कोरी
गंगा क्या बहाती चले कितनी भी गलीज़ मोरी
अपनी तो संस्कृति है भगीरथी गंगा
भारत है दानी, विश्व भिखमंगा...

और और और और
बहुत सारी बातें कहीं अमलेन्दु जी ने।
गोष्ठी के आज प्रधान थे प्रो० प्रज्ञाकर
सो, देते हुए धन्यवाद
मुख़ातिब होकर मान्य अतिथि की तरफ
कहा आपने शालीन लहजे में :
"पाकर निसर्ग सुलभ पुष्प सम्पर्क
पहुँचता है, सज्जनों के शिर तक
तुच्छातितुच्छ सर्पंय सदृश कीट
मुझ जैसा ग्रंथकीट ठीक उसी प्रकार
आ पहुँचा है आप तक आज
कृतकृत्य हो गयो हमारी यह 'मकरंद'
अस्तु मैं धन्यवाद क्या दूँ, और किस को दूँ !
कृपा बनाए रखें महामान्य अमलेन्दु जी
अभ्यर्थना मेरी तो यही है उनसे
गोष्ठी के अपने मित्रों में क्या भला कहा जाय ?
आज की सविशेष बैठक सम्पन्न हुई..."

तत्पश्चात् बाबू अजबलाल सिंह अमलेन्दु एम० एल० ए०
उठकर आए बाहर, जीप थी तैयार
धीर-ललित ढंग से साऽऽयास हुए सवार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इर्द गिर्द बिदाई के निमित्त बीसियों थे चेहरे
खेल गयी उन पर कृत्रिम-अकृत्रिम मुस्कान
हुए परस्पर नमस्कारों के आदान-प्रदान
स्टार्ट हुई जीप भ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ रं रं रं

और मुझ जैसा सामान्य साहित्यकार
पकड़कर राह पाँव पैदल ही बढ़ा अपने पड़ाव की ओर
चला झटकार कर—
'मकरंद' का सौरभ रह गया था पीछे
गाँव से आया था खत—पसाते वक़्त भात,
बीबी के पक गये थे हाथ
कौन भला देगा इस मुसीबत में साथ ?
और कल छात्र सम्मेलन में क्या कहना होगा !
राजनीति क्या है ? विष्ठा है, मल है !
साहित्य क्या है ? गंगा का जल है !
दिखाने के और दाँत, खाने के और...
आप तो अमलेन्दु जी ठहरे खैर समाज के सिरमौर
जातिवाद डंडा है, राजनीति मथनी !
करनी अलग है, अलग है कथनी !!
जमे हैं छज्जूबाग के करीब नवनिर्मित क्वार्टर में
बिछा है सामने शतरंज
साहित्य और संस्कृति है पीठ की ओर
आप तो आप ही हैं मालिक !!
मगर यहाँ तो तकदीर में लगी है आग
जीना हो उठा है दूभर—
छात्रों ने बुलाया था, आ गया हूँ कविता सुनाने
देखकर आप चाहें देखें न देखें
मन ही मन करके कबूल, जाहिरा चाहे मानें न मानें
मगर हुज़ूर मुआफ हो बेअदबी
अगर मैं उछल-उछल के कहूँ कि
ऐंठ रहा है जीवन, सुलग रहा है जीवन
राजनीति पर हावी हो रहा है जीवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढोंगियों की पोल खोल रहा है जीवन
धड़क रहा है जीवन, डोल रहा है जीवन
साहित्य और संस्कृति को तोल रहा है जीवन
चढ़के मौत के सर पै बोल रहा है जीवन
जीवन है राजनीति, राजनीति है जीवन
अंतस् की अभिव्यक्ति ही तो होगा साहित्य !
खाते हैं गुड़, गुलगुले से रखेंगे परहेज ?
भारी करामाती लगते हैं आप तो !
चढ़ना था आपको कनक-कँगूरे पर,
हाय राम, उलटे पड़े दाँव ! गिर पड़े धड़ाम से !!
पा चुके हैं पालिटिक्स का स्वाद,
क्योंकर भला टूटेगा मोह ? "आशा बलवती राजन्"
क्या ही खूब है बाबा व्यास का कथन !
चाहे जो हो, धन्य हैं आप !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीलों की चली बरात

बाढ़ तो है यहाँ की खातिर महा वरदान
लाभकारी जल-प्रलय को गालियाँ मत दे अबे नादान
न आए सैलाब तो बंजर बनेगी भूमि, उपजेगा कहाँ से धान
—नेहरू उड़कर यहाँ आए, हमारा हाल देखा
दे गये फिर हमें अपना ज्ञान !
बाढ़ तो है यहाँ की खातिर महा वरदान
फूंकते पेट्रोल नाहक, उड़ रहे फिर व्यर्थ बीस विमान
उन्हीं को हो सलामत उनका धरम-ईमान
सलामत कुर्सी, सलामत रहे उनकी जान
हमारे ही वोट पाकर डींग मारें और झाड़ें शान
बाढ़ तो है यहाँ की खातिर महा वरदान
नेहरू से मिला अबकी यही अद्‌भुत ज्ञान !!
हमारी तो अमावस है, तुम्हारा यह प्रात
छीलो बात पर तुम बात
जले पर छिड़को नमक दिन-रात
सजा दूल्हा बाज, चीलों की चली बारात
बाँटने को मौत की सौगात !
छींट कर आकाश से खैरात
खुद ही लपकते हो अरे तत्पश्चात
टिड्डियाँ तक खा गई हैं मात्
खद्दरी है भेस, पर पहचान में आई नहीं यह जात
मंत्रियों ने बतायी है अन्न की इफरात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन यहाँ तो अभी सपना हो गया है भात
हमारी तो अमावस है, तुम्हारा यह प्रात
हमारी तो बस मौत ही यह, तुम्हें तो है झाड़नी तकरीर
देश माता के दृगों से बह रहा है नीर
खिंचेगी किस भाँति टूटी नाव पर नवराष्ट्र की तसवीर
भिड़ा पाते हो नहीं तुम एक भी तदवीर
चुनौती है तुम्हारी सामर्थ्य को बस कोसकी
के ये असंयत तीर
हो रहे हम क्षुब्ध और अधीर
देख लो तुम हमारा उर चीर
सतातीं तुमको न क्या अपने वतन की पीर
प्रकृति के दुर्दांत पैरों को न सकती बाँध
क्या जनशक्ति की जंजीर
हाय नाहक देशमाता के दृगों से बह रहा है नीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिल्ली चलो !

अमन का पंडुक भरा है !
हलो करियप्पा, हलो दिल्ली चलो !
शिखंडी का आसरा है,
हलो जी रंगा, हलो दिल्ली चलो !
सियासत का पैंतरा है,
हलो राजा जी, हलो दिल्ली चलो !
दुश्मनों का दिल हरा है,
हलो कृपलानी, हलो दिल्ली चलो !

मत चुओ आँसू-सरीखे, बर्फ जैसे गलो !
संकटों की आग में फौलाद जैसे तुम ढलो !
पिटा मेनन, कान नेहरू के मलो !
दिल्ली चलो, दिल्ली चलो !

बाँह टूटे देशमाता की कभी, थाम लो !
क्या करोगे अस्त्र, तुम आलोचना से काम लो
मुंह बनाओ, नेहरू का नाम लो।
सेठ के बकवास का तुम दाम लो !
खाल ओढ़ो स्वर्णमृग की,
राम-लक्ष्मण-जानकी सबको छलो !
ठगों श्रमिकों को, कुवेरों को भले पंखा झलो !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्दिरों के दीप हो, धीमे जलो !
कहा किसने ठूँठ हो,
तुम कागजी मैदान में फूलो फलो !
गालियाँ दो जहाँ चाहो,
कड़ी आँच में हकूमत की तली
दिल्ली चलो !
दिल्ली चलो !!
दिल्ली चलो !!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ाऊ थी गद्दी पर

खड़ाऊँ थी गद्दी पर
कर रहा था नाम राज
हवा लगी पूछने
कहाँ गये कामराज
सोना लगा हँसने
लोहा लगा रोने
रबड़ लगी घुलने
खादी लगी धुलने
सेन्टर में वाम राज, बाकी अवामराज
त्राँ त्राँ धिन् धिन् धा किट
बनिया टटोलता है पाकिट
मंडियों पे छा गये, खूब चढ़े दाम राज
हवा रही पूछती : कहाँ गये कामराज
खड़ाऊँ थी गद्दी पर
करता था नाम राज
क्या हुआ कामराज, कहाँ गया कामराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्न-पचीसी

1

जन-जन का दिल टोह रही है अन्नब्रह्म की माया
भस्मासुर को मोह रही है अन्नब्रह्म की माया
प्रभु-पीढ़ी को परख रही है अन्नब्रह्म की माया
सिर धुनती है, बिलख रही है अन्नब्रह्म की माया
जन-जन का दिल टोह रही है अन्नब्रह्म की माया

2

डायन बनकर घूम रही है अन्नब्रह्म की माया
यम की ठोड़ी चूम रही है अन्नब्रह्म की माया
लोकधुनों पर थिरक रही है अन्नब्रह्म की माया
बल की बुकनी छिड़क रही है अन्नब्रह्म की माया
डायन बनकर घूम रही है अन्नब्रह्म की माया

3

प्राण-प्राण पर डोल रही है महाकाल की छाया
हिय-हिय में बिख घोल रही है महाकाल की छाया
भ्रम का भूत भगाएगी यह महाकाल की छाया
घर-घर अलख जगाएगी यह महाकाल की छाया
प्राण-प्राण पर डोल रही है महाकाल की छाया

4

गोदामों में अन्न कैद है, पेट-पेट है खाली
भूख-पिशाचिन वजा रही है, द्वार-द्वार पर थाली
दो चाहे हिंसा की देवी को गाली पर गाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलि पशुओं की ले रहो है, खप्पर लेकर काली
गोदामों में अन्न कैद है, पेट-पेट है खाली

5

अन्नब्रह्म को भूल गई क्या वीणा-पुस्तक वाली ?
शीश महल में बुनता है कवि नायलन की जाली !
कुछ आँखों का काजल देखा, कुछ गालों की काली
भुला दिया है कटु सत्यों को, देखों खामखयाली
अन्नब्रह्म को भूल गई क्या वीणा-पुस्तक वाली

6

राजनीति क्यब नाप सकेगी अन्नब्रह्म की मीया
कूटनीति क्या भाँप सकेगी अन्नब्रह्म की माया
मरी खाल की फूँक बनेगी अन्नब्रह्म की माया
दस लेनिन दस तिलक जनेगी अन्नब्रह्म की माया
राजनीति क्या नाप सकेगी अन्नब्रह्म की माया

7

कंकालों को नाच सिखाती अन्नब्रह्म की माया
लघु रूप को विराट दिखाती अन्नब्रह्म की माया
दाढ़ी-चोटी को मिलवाती अन्नब्रह्म की माया
चिन्तन को ठोकर खिलवाती अन्नब्रह्म की माया
कंकालों को नाच सिखाती अन्नब्रह्म की माया

8

कण-कण में शोले भड़काती अन्नब्रह्म की माया
सौ-सौ जंजीरें तड़काती अन्नब्रह्म की माया
वहम झाड़ती, भूत भगाती अन्नब्रह्म की माया
कुटी-कुटी में अलख जगाती अन्नब्रह्म की माया
कण-कण में शोले भड़काती अन्नब्रह्म की माया

9

भत्ता खींचें भले विधायक, हमें चाहिए दाना
आपस में उलझें जननायक, हमें चाहिए दाना
प्रस्तावों पर बतकुट्टन हो, हमें चाहिए दाना
झड़पा-झड़पी हो, अनबन हो, हमें चाहिए दाना
भत्ता खींचें भले विधायक, हमें चाहिए दाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10

भूखे भजन कहाँ से होगा, चारों वेद ठिठोली
मन रोएगा, कान सुनेंगे, आदर्शों की बोली
अन्नचोर खेलें जन-जन के अरमानों की होली
छूट-फूट से टकराएगी सोशलिज्म की गोली
भूखे भजन कहाँ से होगा, चारों वेद ठिठोली

11

अंधी होगी भूख कि छूटे अश्रुगैस के गोले
खौल रही हैं गंगा-जमुना, भड़क उठे हैं शोले
शांति-पाठ सुनते हैं प्रभु जी, सिंहासन क्यों डोले
मनमानी करता है गुपचुप, कालनेमि क्या बोले
अंधी होगी भूख कि छूटे अश्रुगैस के गोले

12

व्यापारी हाकिम नेता...तीनों ही खूब मिले हैं
अन्दर नीचे काई कीचड़, ऊपर कमल खिले हैं
जो चाहो माँगो इनसे, सपनों में होठ हिले हैं
तीन रंग के तेरह टुकड़े क्या ही खूब सिले हैं
व्यापारी हाकिम नेता...तीनों ही खूब मिले हैं

13

भूखों मरते हों बच्चे तो यों ही मत रह जाओ
आँतें सूख रही हों तो आँसू मत वृथा बहाओ
हाथ पैर वाले हो, नाहक कायर नहीं कहाओ
कीड़ों और मकोड़ों जैसे यों मत प्राण गँवाओ
भूखों मरते हों बच्चे तो यों ही मत रह जाओ

14

कूच करेंगे भुक्खड़, थर्राएगी दुनिया सारी
काम न आएँगे रत्ती भर विधि-निषेध सरकारी
बन्दूकों पर हावी होगी सैनिक की लाचारी
सरे आम कोड़े खाएँगे बेदम अत्याचारी
कूच करेंगे भुक्खड़, थर्राएगी दुनिया सारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

15

जन-जन में विद्रोह भरेगी अन्नब्रह्म की माया
गुर्बत का मैदान चरेगी अन्नब्रह्म की माया
भूखों का भवताप हरेगी अन्नब्रह्म की माया
दुख में सुख-संचार करेगी अन्नब्रह्म की माया
जन-जन में विद्रोह भरेगी अन्नब्रह्म की माया

16

कहाँ गये चावल-गेहूँ, दलहन-तिलहन के दाने
कागज का रुपया रोया सुनना पड़ता है ताने
हर सीढ़ी छोटी पड़ती है, भाव चढ़े मनमाने
सबकी कलई उतर गई है, सभी गए पहचाने
कहाँ गये चावल-गेहूँ दलहन-तिलहन के दाने

17

पके बाल की खाल निकालें, करते हैं मुँह काला
इन पर तो कुढ़ता ही होगा नीली छतरी वाला
कौन हटाए चूल्हे पर से अब मकड़ी का जाला
भुक्खड़ देखें मकई के दानों की मोहन माला
पके बाल की खाल निकालें, करते हैं मुँह काला

18

शासन करना क्या जानें ये कपटी-कूर-कुचाली
गल्लाचोरों की पौ बारह, जनता की पामाली
किसे रिझाए नेताओं की सूरत रोगन वाली
राजनीति बदनाम हुई, बाकी है खामखयाली
शासन करना क्या जानें ये कपटी-कूर-कुचाली

19

गुलछर्रे वे उड़ा रहे हैं गुटबंदी के बल पर
उनकी निष्ठा टँगी हुई है केवल अपने दल पर
भाई और भतीजे हावी हैं उनकी हलचल पर
हम तो यों ही तरस खा गए उनकी घुटी अकल पर
गुलछर्रे वे उड़ा रहे हैं गुटबंदी के बल पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

20

बैलों के साथी हलधर, तुम हँसिया वाले आओ !
खान श्रमिक तुम भूत सरीखे काले-काले आओ !
आओ छटनी के शिकार ! तुम निपट निराले आओ !
आओ तुम बेकार पंगु तुम, बैठे-ठाले आओ !
बैलों के साथी हलधर, तुम हँसिया वाले आओ !

21

आओ, तुमको बुला रही है अन्नब्रह्म की माया
उभर रहा है देश यही है अन्नब्रह्म की माया
जर्न-मन में करवट लेती है अन्नब्रह्म की माया
विप्लव के अण्डे सेती है अन्नब्रह्म की माया
आओ, तुमको बुला रहो है अन्नब्रह्म की माया

22

हरी चूनरी, लाल घाघरा, भूत-भवानी आई
दुखियों की माँ मजलूमों की अपनी रानी आई
महाकाल की मौसी आई यम की नानी आई
तटबंधों की क्षय होगी क्या, प्रलय हिमानी आई
हरी चूनरी लाल घाघरा, भूत-भवानी आई

23

हम भी अब हल-बैल सँभालें रचना-फचना छोड़ें
काफी गोद लिया कागज, आओ अब धरती कोड़ें
खिला चुके आकाश कुसुम, मिट्टी से नाता जोड़ें
अन्न नहीं है उधर, इधर आओ अपना रुख मोड़ें
हम भी अब हल-बैल सँभालें रचना-फचना छोड़ें

24

कोटि-कोटि मुख कमल खिलेंगे, इन्हें चाहिए दाना
कोटि-कोटि कर कमल हिलेंगे, इन्हें चाहिए दाना
आधा अनशन आधा भोजन, इन्हें चाहिए दाना
नया राष्ट्र नौ लाख नियोजन, इन्हें चाहिए दाना
कोटि-कोटि मुख कमल खिलेंगे, इन्हें चाहिए दाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

25

नव विधान, नव यंत्र रचेगो अन्नब्रह्म की माया
नई ऋचा, नव मंत्र रचेगी अन्नब्रह्म की माया
चिन्तन को नव इंगित देगी अन्नब्रह्म की माया
युग की पीड़ाएँ हर लेगी अन्नब्रह्म की माया
नव विधान, नव यंत्र रचेगी अन्नब्रह्म की माया

दोहा

सीधे-सादे शब्द हैं, भाव बड़े ही गूढ़
अन्न पच्चीसी घोख ले, अर्थ जान ले मूढ़

कबिरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ
बन्दा क्या घबरायगा, जनता देगी साथ

छीन सके तो छीने ले, लूट सके तो लूट
मिल सकती कैसे भला अन्नचोर को छूट

आज गहन है भूख का, धुँधला है आकाश
कल अपनी सरकार का होगा पर्दाफाश

नागार्जुन-मुख से कढ़े साखी के ये बोल
साथी को समझाइए रचना है अनमोल

अन्नपचीसी मुख्तसर, लोग करोड़-करोड़
सचमुच ही लग जाएगी आँख-कान में होड़

अन्नब्रह्म ही ब्रह्म है बाकी ब्रह्म पिशाच
औघड़ मैथिल नाग जी अर्जुन यही उवाच

इति श्री अन्नपचीसी समाप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलो-चलो धरना दें चलकर

चलो-चलो, धरना दें चलकर दिल्ली के दरबार में
ऊब्र-डूब करते हो बुद्धू नाहक ही मझधार में
अपनी बहन बनी है मलका, जस फैला संसार में
कागज का रुपया रावे या लगे आग बाजार में
चलो-चलो, धरना दें चलकर दिल्ली के दरबार में

उसे नहीं आडम्बर भाता, खुश है छोटी कार में
माता स्वर्ग सिधार गई तो पली पिता के प्यार में
देशभक्ति पाई थी दादा-दादी से उपहार में
तैराकी सीखी थी उसने वहाँ, टेम्स की धार में
उसे नहीं आडम्बर भाता, खुश है छोटी कार में

जगत्-तारिणी प्रकट हुई है नेहरू के परिवार में
उसके कई मुखौटे, देखो, छपते हैं अखबार में
जान्सन-विल्सन सभी जुटे हैं पूजा में, उपचार में
कोसीगिन भी दिखता तत्पर मैत्री में, सहकार में
जगत्-तारिणी प्रकट हुई है नेहरू के परिवार में

पाटिल-रेड्डी-घोष पड़े हैं भारी सोच-विचार में
कामराज का विकट खोपड़ा, तपता नहीं बुखार में
चुप मोरारजी, नजर टिकी है बस पूनी के तार में
हेरफेर होने वाली है फिर शायद सरकार में
पाटिल-रेड्डी-घोष पड़े हैं भारी सोच-विचार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नशा चढ़ा बहुमत का, आती खट्टी बास डकार में
लगता है मिल गई हुकूमत इनको कहीं उधार में
शासक दल के क्या कहने हैं, माहिर कपटाचार में
पार्लमेंट को बदल लिया है इन सबने चटसार में
नशा चढ़ा बहुमत का, आती खट्टी बास डकार में

सत्य अहिंसा घुटे झूठ-औ-हिंसा की फुफकार में
पैसा पस्त हुआ परदेशी मुद्रा से, व्यभिचार में
अपनी आँख गँवा बैठे बाहर की गर्द-गुबार में
जाने कहाँ पहुँचते हैं इस रपटीली रफ्तार में
सत्य अहिंसा घुटे झूठ-औ-हिंसा की फुफकार में

गिनती के चावल रोते हैं महँगाई की मार में
जीरा हँसा भभाकर, भड़का नकली तेल बघार में
आलू डोल रहे हैं, भिंडी सहमी खड़ी कतार में
देशी गेहूँ पड़े दिखाई सपनों के कोठार में
गिनती के चावल रोते हैं महँगाई की मार में

तर है सारा भारत लाठी-गोली की मनुहार में
बरस रहे हैं विधि-निषेध ही बादल की बौछार में
वोट रो पड़े, इठलाती है कुर्सी मगन दुलार में
कौन खलल डालेगा अब इन मुगलों के अधिकार में
तर है सारा भारत लाठी-गोली की मनुहार में

महिषासुर मुस्तैद हुए देवी के साज-सिंगार में
लो, ये तो आरती सजाते अलमुनियम की थार में
अलमुनियम का छुरा चलाकर निकले ये ज्यौनार में
धन्य चौधरी-मेहता-सुब्रम्, घर फूंके त्यौहार में
महिषासुर मुस्तैद हुए देवी के साज-सिंगार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठुमक रही रेशम की साड़ी चिथड़ों के अंबार में
गूँज रहे हैं महँगाई के पद कोमल-गंधार में
मेढक तबला ठोक रहे हैं झींगुर घुसे सितार में
युग को झुठलाती है थिरकन पायल की झंकार में
ठुमक रही रेशम की साड़ी चिथड़ों के अंबार में

खूब लड़ी मर्दानी वो तो चमकी थी तलवार में
यह मर्दानी दमक रही है डालर के अभिसार में
उसे फिरंगी झुका न पाये, आगे थी ललकार में
इसको तो वे बहा ले गये हमदर्दी की धार में
खूब लड़ी मर्दानी वो तो चमकी थी तलवार में

चलो-चलो, धरना दें चलकर दिल्ली के दरबार में
शाही नखरे दबे पड़े हैं वहाँ कुतुब मीनार में
क्रान्ति खिली है लाल किले की लाल-लाल दीवार में
'भूखहरण टिकिया' मिलती है वहाँ सुपर बाजार में
चलो-चलो, धरना दें चलकर दिल्ली के दरबार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उम्मीदवार

चोंच में लिए टिकट
सीधे आए निकट
मामला था विकट
—चुनने थे उम्मीदवार !

बोरियाँ दीं उलट
हड्डियाँ लाये थे, दिखलाईं झट
शुद्ध परमार्थी हुए प्रगट
—हुक्म मानने को तैयार !

गांधी ने सोचा, हल करेंगे मुल्क का
ये ही संकट
निगला है सोना-चाँदी-ताँबा-गिलट
हार मानेंगे इनसे माया-नगरी के भी नट
—यही हैं असली उम्मीदवार !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आखिर...इनसान हैं भाई मोरार जी

बेटा घँसा है बाप भी, भाई मोरार जी !
झख मारता है पाप भी, भाई मोरार जी !
खुद को सके न नाप भी, भाई मोरार जी !
क्या कीजिएगा आप भी, भाई मोरार जी !

खादी में दाग़ लग गया, भाई मोरार जी !
कान्ति का भाग जग गया, भाई मोरार जी !
मिलता न चैन बाप को, भाई मोरार जी !
क्या हो गया है आपको, भाई मोरार जी !

कुर्ता कफ़न से लड़ गया, भाई मोरार जी !
कम्बख़्त वो भी अड़ गया, भाई मोरार जी !
शैतान सिर पे चढ़ गया, भाई मोरार जी !
गादी का मोह बढ़ गया, भाई मोरार जी !

इज्जत थी, वो हुई हवन, भाई मोरार जी।
आई न चेहरे पे शिकन, भाई मोरार जी !
चुपचाप पी गये जलन, भाई मोरार जी !
है दंग मादरे वतन, भाई मोरार जी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वो इल्लतों से दूर है, भाई मोरार जी !
बेटे का क्या कसूर है, भाई मोरार जी !
बापों में एक बाप हैं, भाई मोरार जी !
सबसे महान आप हैं, भाई मोरार जी !

तकली को काटे सूत तो क्या है मोरार जी !
दिल हो अगर मजबूत तो क्या है मोरार जी !
कंचन बटोरे भूत तो क्या है मोरार जी !
खाये कमाये पूत तो क्या है मोरार जी !

हिलते नहीं, चट्टान हैं भाई मोरार जी !
रुकते नहीं, तूफान हैं भाई मोरार जी !
इस मुल्क के दिनमान हैं भाई मोरार जी !
आखिर तो भी इनसान हैं भाई मोरार जी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वगत-चिन्तन कांग्रेसी आला कमान का

हुए, यदि मध्यावधि चुनाव...
अपन तो, समझो, डूब ही गये अब !
कोई नहीं आएगा काम !
रामसुभग सिंह या जगजीवन राम !
हाय रे बिहार,
लेगा क्या फिर से संविद-सरकार ?
दलबदलू 'विभीषण' करेंगे तेरा उद्धार !
दिया नहीं तूने शोषित-सिंह को अपना प्यार !
हाय रे, बिहार !
सात-सात पार्टियाँ रहेंगी कंधों पर सवार
फिर भला कैसे होगा बेड़ा तेरा पार ?
हाय रे बिहार !
कब मिलेगी तुझे अब 'स्थायी सरकार' ?
(और, वो भी अपन सिंडिकेट-छाप !!)
(बाप रे बाप !!)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'फेस-टु-फेस...'

रसातल में जा रहा था
सूबा बिहार—
यानी जनक-याज्ञवल्क्य का देश
स्वार्थियों के चंगुल में
कराह रही थी बिहार-कांग्रेस
दिल्ली के महाप्रभु
ऊपर से फिर भी
लाद रहे थे अपना निर्देश
सच्चे कांग्रेसियों के दिल को
लग रही थी ठेस पर ठेस
असह्य हो गया था क्लेश
सठिया चुके थे सिंह-सहाय-महेश
चल रही थी 'फुल स्पीड' में
तिकड़म की रेस
सुधांशु-हरिनाथ-भोला-दीपनारायण-कृष्णकांत
खड़े हुए पतितों के सामने 'फेस-टु-फेस'
लुभा नहीं पाये इन्हें
थैलीशाह : धनेश
भहरा के गिरी आखिर
बिहार-कांग्रेस
धराशायी हुआ कंस
काम नहीं आया शोषित का भेस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाह भई, मंडल

वाह भई, मंडल !
वाह भई, विरोधाभासों का बंडल !
वाह भई, बिहारी कालनेमि का कमंडल।
वाह भई, शोषित-शिरोमणि...
वाह भई, बी० पी० मंडल !!
हाथों में लिए कल्पवृक्ष की मंजरी का डंठल
देवताओं का राजा, इन्द्र यानी आखंडल !
बैठा रहा तेरे कंधों पर पूरे पचास रोज
गजब की दमक थी, गजब का था ओज...
दम साध कर देखती रही दुनिया
शोषक का भंडारा, शोषित का भोज
पतितों की सज-धज, फरेबियों का पोज
दम साधकर देखती रही दुनिया—
पूरे पचास रोज...
सम्राट् अशोक की नगरी में ऽऽऽ
वाह भई, बी० पी० मंडल !
वाह भई, विरोधाभासों का बंडल
वाह भई, कांग्रेसी कालनेमि का कमंडल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी अकाल 'सहाय'

गोलियाँ खाकर गिरे थे,
तरुण थे असहाय !
कफन तक तुम दे न पाये,
जी,
अकाल 'सहाय' !

दस मरे या बीस...
तीस या चालीस...
रात दिन पीछा करेगा छात्र
—प्रेतों का विकट समुदाय
घिर गए हो हाय
बच निकलने का रहा न उपाय !

चबाती है सत्य का शव
अहिंसा की गाय
धुन रहे हैं बैल सिर
उनसे न क्यों लो राय !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोरस : चन्द विधायकों का

एक स्वर : मुश्किल से पहली बार सफल हुआ जीवन
(अति-शोषित) बना रहे असेम्बली में अब तो अपना आसन
दूसरा स्वर : हमें नहीं चाहिए राष्ट्रपति-शासन
(शोषित) कौन करेगा पसंद 'मिड-टर्म इलेक्शन

सम्मिलित स्वर : जय हो जीऽ
(अन्य) जय हो !
जय हो जीऽ
जय हो !!
पासवान भोलाऽऽऽ
फाड़ दिया आपने
साजिशों का झोलाऽऽऽ !

तीसरा स्वर : नाहक अब भी टपकाते हैं लाऽऽर
(साधारण) मंडल जो, कोशिश होगी बेकाऽऽर
चौथा स्वर : पसोपेश में डूब गये चौहाऽऽन
पटने में आना ही था तूफाऽऽन

सम्मिलित स्वर : आओ जीऽ
आओ जीऽ
पासवान भोलाऽऽ
गिरा दिया आपने
सौ मन का बारूदी गोलाऽऽ
कांग्रेसी कंस के गढ़ पर...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तक छिपे हुए थे उनके दाँत और नाखून

संस्कृति की भट्ठी में कच्चा गोश्त रहे थे भून !
छाँट रहे थे अब तक बस वे बड़े-बड़े कानून !
नहीं किसी को दिखता था दूधिया वस्त्र पर खून !
अब तक छिपे हुए थे उनके दाँत और नाखून !
संस्कृति की भट्ठी में कच्चा गोश्त रहे थे भून !

तन मन अर्पित किए हुए थे, खुश था अंकिल साम !
क्षुधा-अशिक्षा-रोग-रूढ़ि सबका मिलता था दाम !
बाहर-बाहर नेहरू तक को करते रहे प्रणाम !
भुना रहे थे बेदर्दी से बापू जी के नाम !
तन मन अर्पित किए हुए थे, खुश था अंकिल साम !

गांधी-तिलक-सुभाष, सभी से परिचित उनकी आँत !
वही इन्दिरा की गर्दन पर चले गड़ाने दाँत !
उनकी गद्दारी के आगे हुआ विभीषण मात !
खद्दरधारी बाघों की वो रही पाँत की पाँत !
गांधी-तिलक-सुभाष, सभी से परिचित उनकी आँत !

मायावी हैं, बड़े घाघ हैं, उन्हें न समझो मन्द !
तक्षक ने सिखलाये उनको 'सर्प नृत्य' के छन्द !
अजी, समझ लो, उनका अपना नेता था जयचन्द !
हिटलर के तम्बू में अब वे लगा रहे पैबन्द !
मायावी हैं, बड़े घाघ हैं, उन्हें न समझो मन्द !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तम ही तम उगला करते हैं अभी घरों में दीप !
वो जनसंघी, वो स्वतंत्र हैं जिनके परम समीप !
उनकी लेंड़ी घोल-घोल कर लो यह आँगन लीप !
उनके लिए ढले थे मोती, हमें मुबारक सीप !
तम ही तम उगला करते हैं अभी घरों में दीप !

सिंडिकेट क्या है ? धूर्तों का वह प्रच्छन्न गिरोह !
सिंडिकेट क्या है ? प्रभुता का सत्ता का व्यामोह !
सिंडिकेट क्या है ? अमानवी तिकड़मियों की खोह !
सिंडिकेट क्या है ? बस, अपनी जनता के प्रति द्रोह !
सिंडिकेट क्या है ? धूर्तों का वह प्रच्छन्न गिरोह !

मानव-तन धारी नर-भक्षी बाघों का समुदाय !
'सिंडिकेट' बन बैठा कैसे, पता न चलता हाय !
बाघिन सी गुर्राती है गोमुखी अहिंसा-गाय !
जनता इन छलियों के आगे सदा रही निरुपाय !
मानव-तन धारी नर-भक्षी बाघों का समुदाय !

आपस में ही लड़ बैठे हैं, चोट खा गये, वाह !
चाट-चाट कर घाव अभी वे कैसे रहे कराह !
मलयाचल की शिशिर गुफा में बुझा न अन्तर्दाह !
लो, सुन लो, दक्षिण से आई गप्पा जी की आह !
आपस में ही लड़ बैठे हैं, चोट खा गये, वाह !

खबरदार, तुम इनकी माया भूल न जाना, मित्र !
भूल न जाना इन पाँचों का गठबंधन अपवित्र !
हावी हो शायद त्रिमूर्ति पर पंचमूर्ति का चित्र !
अभी और बिखरेगा इन का वो खूँखार चरित्र !
खबरदार, तुम इनकी माया भूल न जाना मित्र !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूल चटाओ

आओ, आओ !
इस दंगल में हाथ बटाओ...
आओ आओ !
सिंडिकेट के पहलवान को धूल चटाओ...
आओ, आओ !
प्रजातंत्र की वेदी पर से
कालनेमि की लाश हटाओ...

प्रेसिडेंट के इस चुनाव को भूल न जाओ,
आओ, आओ !
खर-दूषण-मारीचों से धोखा मत खाओ!
आओ, आओ !
अरे नहीं तुम नये हिंद का नाम हँसाओ
आओ, आओ !
झिझको नहीं, नहीं शरमाओ
आओ, आओ !

नहीं चलेगी अगड़म्-बगड़म्
नहीं चलेगी पाँच सवारों का यह तिकड़म
नहीं चलेगा चंड-मुंड का झगड़ा-झगड़म्
विफल रहा है सिंडिकेट का रगड़ा-रगड़म्
महषिमर्दिनी का त्रिशूल है तगड़ा-तगड़म्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं चलेगी अगड़म्-बगड़म्
नये हिंद में आ धमका है नया जमाना
मुश्किल होगा इसको अब पीछे लौटाना
देख देख कर इसकी गति-मति
हाथ मलेगा लगातार निक्सन का नाना
अरबों डालर गल जाएँगे
नहीं चलेगा पता-ठिकाना
नये हिंद में आ धमका है नया जमाना

मानवे लौटा वहाँ चाँद का जिस्म खुरचकर
यहाँ छछूंदर बना बिलौटा सगी बहन की नाक कुतर कर
पाँचों खूनी, पाँचों दिग्गज जाने किधर छिपे जंगल में !
उनका पट्ठा काँप रहा थर-थर दंगल में !
जनमत अंकुश लटक रहा भाले-सा ऊपर
जबरन ठेला गया अभागा हद के अन्दर
धन्नासेठों की थैली अब क्या कर लेगी
बेचारे की हड्डी-पसली चूर करेगी
दम तोड़ेंगे कांग्रेसी आलाकमान के नाना-नानी
रोयेंगे फिर तो बिसूर कर राजा-रानी

आओ, आओ !
भारतमाता के मन्दिर में अबकी घी के दिए जलाओ !!
आओ, आओ !
गिरि बाबा की करो आरती, जय बुलवाओ !!
आओ, आओ !
रेड्डी जैसे छिपे घाघ को सबक सिखाओ !!
आओ, आओ !
निजलिंगी लिंगायतजी को चन्दन वन की राह दिखाओ !!
आओ, आओ !
कामराज के और चवन के पकड़ो कान, पास बैठाओ !!
आओ ! आओ !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस दंगल में हमदर्दी का हाथ बटाओ !
सिंडिकेट के पहलवान को धूल चटाओ !
प्रजातंत्र की वेदी पर से कालनेमि की लाश हटाओ !
आओ, आओ !!
आओ, आओ !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दान दो ! दान दो !!

दान दो ! दान दो !!
सूखे होठों को गान दो !!
पलकों को सपनों का धवल उफान दो !
ओ प्यारे कैनेडी दादा,
पिटे हुए मुहरों को कुछ तो मान दो !
बखारों को धान दो !
बेसुध देहों को प्रान दो !
[ओ मेरे पालतू !
क्यों बना है फालतू ?
कुएँ में पूरा बाँस डाल तू !
ओ मेरे पालतू !...]
अभी कहाँ सूखेंगे स्रोत वहाँ दान के !
बढ़ गए आवागमन विमान के !
दुखी हैं लीडर क्यों दिल्ली अभियान के !?
चलना उन्हें चाहिए अब तो सीना तान के !
राजा जी को अपना सेनापति मान के !

सुलगेगी कैसे महा क्रान्ति की चिता—
तुम्हारे रहते ख्रुश्चेव निकिता ?
प्रगति-समता-शांति के पिता !
रंज हैं तुम पर माओ-त्से-तुङ्
कोसते रहेंगे कुङ्-कुङ्-कुङ्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओं मणि पद्मे हुम्···
इस तरफ ध्यान दो
मिग दो, विमान दो
मुँह बा के बैठे हैं, पूआ पकवान दो
हम पुराने कामरेड; इज्जत दो ! शान दो !
नेहरू की बातों पर कान दो !
दुश्मन से भिड़ेंगे, तीर दो, कमान दो !
घर को सँभालेंगे, साजो-समान दो !
बुढ़भस का ज्ञान दो !
बढ़ गया है लोभ, अटल-ईमान दो
सूखे होठों को गान दो !
दान दो ! दान दो !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रान्ति तुम्हारी तुम्हें मुबारक

क्रान्ति तुम्हारी तुम्हें मुबारक
भ्रान्ति तुम्हारी तुम्हें मुबारक
कूट-कपट की भीतरघाती
शान्ति तुम्हारी तुम्हें मुबारक

लाल चीन को वहम मुबारक
तुमको अपना अहम् मुबारक
पूज रहे जो तुम्हें, उन्हें भी
उनका गहमागहम मुबारक

अर्धशती अभिमान मुबारक
अन्तरिक्ष-अभियान मुबारक
एक आंख का भौतिकवादी
द्वंद्वात्मक विज्ञान मुबारक

क्रान्ति जवाबी तुम्हें मुबारक
समझ जवाबी तुम्हें मुबारक
मार्क्स और लेनिन-स्तालिन के
ताला-चाबी तुम्हें मुबारक

माओ मामा, चाऊ भाई
कर लें तुमसे हाथापाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमको क्या है, चरण तुम्हारा
चाँपें पाकिस्तानी नाई

तुम्हें चाहिए अंधअनुगमन
तुम्हें चाहिए ठकुरसुहाती
अनुजों तक के स्वाभिमान से
अब तो तुमको हिचकी आती

प्राहा-पथ पर साँझ-सकारे
तुमने सौ-सौ टैंक उतारे
दंग रह गये वे बेचारे
अपनी सज्जनता के मारे

समझदार वे, दृढ़गभीर वे
चेक और स्लोवाक वीर वे
दुर्मद, तुमको झेल रहे हैं
विपदाओं से खेल रहे हैं

उनका तथाकथित 'प्रतिविप्लव'
उनकी 'अवनति' उन्हें मुबारक
उनका सत्य, अहिंसा उनकी
उनकी मति-गति उन्हें मुबारक

भूतनाथ हो, बाँस-देव हो
यों तो साथी ब्रेजनेव हो
ध्वस्त हो गया मोह हमारा
तुमने ऐसा डंडा मारा

ग्रह-उपग्रह आ गये हाथ में
आधी दुनिया खड़ी साथ में
अणु-आयुध अमोघ हैं संचित
पर अंतर्मन परम प्रपंचित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोरे तन पर चर्बी छायी
चिंतन तक में सुस्ती आयी
बदल गये हो, तुम तो भाई
रहा न संशय रत्ती-राई

धन्य क्रेमलिन, धन्य क्रेमलिन
लेकिन यह तो अन्य क्रेमलिन
शरणागत का वधिक क्रेमलिन
क्रूर अधिक से अधिक क्रेमलिन

क्रान्ति जवाबी तुम्हें मुबारक
अक्ल नवाबी तुम्हें मुबारक
मार्क्स और लेनिन-स्तालिन के
ताला-चाबी तुम्हें मुबारक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाली बढ़ी सौ गुनी

झुलस गयें नुकीले दलों वाले देवदार
परतों पर परतें दरकी हिमानी की
लगा गया कौन दस्यु जाने किस भाँति आग
सहसा सुलग उठी पीहर भवानी की
उफनाया कालकूट, गर्म हुआ जटाजूट
बल पड़े भृकुटि में त्रिकाल ध्यानी की
फिर सौ-सौ युगों के बाद ठिठके कैलाशपति
आयी याद रावण-से शिष्य अभिमानी की

मुखर हुआ मठों में जनवादी युद्धोन्माद
तंजुर कंजुर पर गर्द चढ़ी सौ गुनी
रेशम का नील पट सुर्ख़ हुआ एकाएक
लोभ में अजगर की नक्श कढ़ी सौ गुनी
औंधे पड़े अमिताभ, मूर्च्छित हुए मंजूश्री
रुद्र ने नगाड़े पर खाल मढ़ी सौ गुनी
कम्पित हुए दिक्पति, क्रुद्ध हुआ महाकाल
खौल गया ब्रह्मपुत्र, लाली बढ़ी सौ गुनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिमूर्ति

फिजो : (दलाई लामा की याद में)
तुम भागे तो पहुँचे हिन्दुस्तान
नभ में गूँजा स्वागत का ऐलान
हम गद्‌गद् थे, चीन हुआ हैरान

और, आज मैं खुद आया हूँ भाग
स्वागत में ये तोप रहे हैं दाग
किंतु उधर नेहरू उगलेंगे आग

दलाई लामा : (फिजो की याद में)
नहीं लौटने का लेना तुम नाम
हम दो हैं, पर एक सरीखा काम
शत्रु करें शीर्षासन का व्यायाम

मुक्ति मार्ग है, लंदन के फुटपाथ
कदम-कदम पर दुनिया देगी साथ
भेजूँ सोना ? खाली होंगे हाथ···

दोनों : (जय प्रकाश की याद में)
आप भरोसा, आप हमारी आस
और भला हम जाएँ किसके पास
भावी मार्शल ! जय हे पुंज प्रकाश !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय प्रकाश : (फिजो और दलाई लामा की याद में)
समझ रही है जनता अपनी भूल
चाऊ-नेहरू चाटेंगे अब धूल
तुम दोनों पर बरसाऊँगा फूल

पृष्ठभूमि में कोरस

"फिजो महाप्रभु जय ! जय नागाभूमि !
"जय दलाई लामा, जय तिब्बत भूमि।
"महा महाप्रभु जय, जय पुंज प्रकाश !
"जय चियाङ्, तानाशाही मृदुहास !"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरानी जूतियों का कोरस

(1)

सहगान :

अनमोल हमारी धूल है अनमोल हमारी धूल

धूल हमारी, धूल हमारी, धूल !
टँगे रहेंगे हम बाँसों पर खिले सृष्टि के फूल
हम दुरुस्त करने निकले हैं, मानवता की भूल
गमलों में जो कैद पड़े हैं, उन फूलों पर डालेंगे हम
अपनी प्यारी धूल ! धूल हमारी, धूल हमारी, धूल !
है अनमोल, है अनमोल, है अनमोल हमारी धूल !

एक मामूली देहाती जोड़ा :

मेरी खातिर तरसा करते,
ऊँचे महल-अटारी
मुझको है कतई न गवारा,
वैभव की बीमारी
मुझको लेकर साथ द्वारका,
पहुँचे विप्र सुदामा
मेरी गति-विधि समझ नहीं
पाये थे शकुनी मामा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तल्ला विहीन पम्प शू :

हमने तोड़ी उस नवाब की नाक
किया कलेजा चाक
छिल जाती थी ढाके की मलमल
से जिसकी देह
जिसकी छत पर बरसा करते थे
कंचन के मेह
हमने तोड़ी उस नवाब की नाक !

भद्दे टायर की चप्पल :

मुझे पहनने वाला आज
किसी सूबे का बना मिनिस्टर
उन कदमों को चूम रहे हैं
कितने जज्ज, कलक्टर !

चिप्पियों वाला चमरौधा :

पार कर गया मेरा साथी
पदयात्रा की मंजिल
जीवन-दान किया हमने,
आसान हो गई मुश्किल !

बदशक्ल जनानी सैंडल :

मैं थी जिन पैरों की शोभा
वे हो आये चीन
सजनी के तो पर निकले हैं,
साजन हैं गमगीन !

सहगान :

महल गिरायें प्रवंचना के
फूल खिलायें नव रचना के
अपना दुख हम तो जायेंगे भूल
गमलों में जो कैद पड़े हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन फूलों पर डालेंगे हम
अपनी प्यारी धूल
धूल हमारी, धूल हमारी, धूल !

(2)

जूती सलीमशाही :

मुझे पहनकर इठलाती थी
रूपनगर की रानी
फौजी बूट भरा करते थे मेरे आगे पानी
नाक रगड़ते थे लुक-छिपकर,
मुझ पर प्रणय भिखारी
अरे, कहाँ से कहाँ आ गयी मैं
किस्मत की मारी !

बाथरूम की जापानी चप्पल :

कमल खिलाये जो पग-पग पर,
उनकी भी प्यारी
अंगूरी जिनकी रग-रग में
मैं उनकी भी प्यारी
जिनकी चितवन में बिजली है
अंग-अंग में थिरकन
उनके श्रीचरणों की स्मृति में
धन्य रहे यह जीवन

फ्रेंच शू :

बाल डांस में हम उनसे टकराये
काकटेल में घुल-मिलकर मुस्काये
चले गये आस्ट्रिया युवक-उत्सव में
विश्व शांति का सौरभ ही ढो लाये !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बूढ़ा इंगलिश बूट :

बन जाऊँगा मैं चिप्पी कट-छिल के
फूट जायेंगे फोड़े बरबस दिल के
मैं मार्शल के पैरों का वह प्यारा
अपोजिशन की चप्पल ने था मारा !

चप्पल विद्यासागरी :

फुह; विधान के
बड़े क्लाक की टिक्-टिक्
मैं बंगाल विधान सभा की स्पुत्निक
दल-गत वन्हि-शिखा
है मुझ में संचित
इस सुहाग से तुम
सारे हो वंचित !

सहगान :

सह अस्तित्व हमारा नारा, बाटा-फ्लैक्स नहीं कर सकते
इस बिरादरी का बटवारा, हम हो आये रूस, हम हो आये चीन
लंदन वाशिंगटन हो आये, देखा है फिलपीन
मस्ती छायी, सहलाया हमने मंत्री का माथा
अभी-अभी उस कलकत्ते का कितना नाम हुआ था
धूल हमारी है अनमोल, धूल हमारी, धूल, हमारी धूल !

(3)

अहिंसक ग्रामोद्योगी चप्पल :

साथिन पहुँची राजभवन में
मैं हूँ यहाँ अकेली
उन चरणों को रुची हवाई
चप्पल नई-नवेली
बालम हार गये निर्वाचन
राज्यपाल होना था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुझको तो भूदान-यज्ञ के
सेंटर में रोना था !

शोलापुरी चप्पल :

मैं कृपलानी के चरणों की दासी
मैं लामा के मंदहास की प्यासी
क्या पंचशील का भाया कभी तमाशा
मैं आज नहीं तो कल पहुँचूँगी ल्हासा !

बूट मेड इन प्राग :

मुझको लाये कामरेड डाँगे
मिली है गुडविल मुझे बिना माँगे
रात-दिन करती आई हूँ हवाई यात्रा
अच्छी तरह मालूम है विरोध की मात्रा

मलयाली चप्पल नम्बूदरीपाद की :

क्या राजभवन,
क्या केबिनेट, सब देखा
मैं जूता जग की
देवी हूँ शशिलेखा !

नुकीली जूती नेहरू की मेड इन पटियाला :

मैं कोटि-कोटि की
धड़कन धुनने वाली
मैं देश-दशा पर
माथा धुनने वाली
मैं पहुँच गयी म्यूजियम
पुरानी होकर
मैं भावी युग की
खातिर बनी धरोहर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मद्रासी चप्पल राजगोपालाचारी की :

व्यक्ति सुखी, परिवार सुखी,
फिर राष्ट्र सुखी हो सारा
कांग्रेसी गति-विधि से
सुख की सूख गयी धारा ।
मेरे मालिक इसीलिए तो,
दर-दर भटक रहे हैं
समझ न पायी नेहरू जी ने
क्यों अपशब्द कहे हैं !

सौभाग्यवती जूती बिड़ला की :

मिलों कारखानों के स्वामी
प्राइवेट-सेक्टर के हामी
सोशलिज़्म क्या, सर्वोदय क्या
सभी पंथों के वे अनुगामी
उन्हें जानती मैं अन्दर से,
दिल है उनका मोम
नहीं बाँसुरी बजायेंगे वह,
नहीं जलेगा रोम !
बन्द न होंगे सरकारी
रोकड़ के सौ-सौ छेद
मुझसे पूछें भी मुरार जी,
मैं वतलाऊँ भेद ।
पीकर लाखों का लहू चमकने वाली
मैं धन-कुवेर के तलुवों की हूँ लाली !

जरीदार जूती निजाम की :

एक सौ पूत, एक हजार नाती
हरम के चेहरों की याद नहीं आती !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहगान :

आओ हम सब चलें, राष्ट्रपति भवन पधारें
महामहिम के जूतों की आरती उतारें
जीरादेई की धरती अब भी रोती है
फसल नहीं है, धूल उड़ाकर खुश होती है
बैठ गये हैं कानों में जो उँगली डाले
उनके सर पर हाथ बनें हम चम्पीवाले
जादूगर हैं, सबका होश दुरुस्त करेंगे
व्रत लेते हैं, दुखियारों का दैन्य हरेंगे
है अनमोल हमारी धूल ! धूल हमारी, धूल हमारी, धूल !
है अनमोल हमारी धूल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्य चिन्तन

पीठ पर
विज्ञप्तियों का
बोझ लादे
'दिव्य चिन्तन'
जगमगाता है !
योगियों के
दुख भगाता है !
बौद्धिकों के दिलों में
संशय जगाता है !
अकिंचन की खीझ के बारूद में
आगी लगाता है !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नये वर्ष की अगवानी में

नये वर्ष की अगवानी में
हमने चाय की चुस्कियाँ लीं
हमने सिगरेट जलाए
हम नाचे
हमने गाना गाया
हमने थालियाँ वजाईं
नए वर्ष की अगवानी में
हमने उत्सव मनाया
23-30 से 1-30 तक
लगभग दो घंटे
मध्यरात्रि में हमने मनाया जागरण पर्व
बटुर आए थे ऋग्-यजु :—साम-अथर्व
मुझे तो अभी ऐसा ही लगा
तभी तो इतना जगा
कल किस तरह दम फूल रहा था
डाक्टर सान्याल आए तो मैं साँसत में झूल रहा था
और अभी ?
और अभी ?
कौन कहेगा कि मेरा दम फूलता था कल !
कौन कहेगा कि रामदास वावू कल रात मुझे देखने आए !
कौन कहेगा कि दमा के डर से रात का खाना नहीं लेता हूँ !
कौन कहेगा कि शाम को 5 वजे ही मैं दड़बे में आ जाता हूँ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौन कहेगा कि इन दिनों दीवानगी नहीं आ सकती मुझ पर !
कौन कहेगा कि चौदह-चौदह घंटे महदूद रखता हूं अपने को
बिस्तर पर
कौन कहेगा कि अख़लाक़ और मुद्रिका और अखिलेश ही मेरे
हाथ-पैर हैं इन दिनों
कौन कहेगा कि मेरा दम फूलता था कल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मात्राएँ दीर्घ हैं...

छंदों में तो मुश्किल से आएगा य' नाम...
मात्राएँ दीर्घ हैं, क्यों न कर लूँ प्रणाम !
बोल री पूरब, यहाँ खीझ का क्या काम ?
बच्चों की लाड़ को चाहिए ज्यादा ही दाम
मात्राएँ दीर्घ हैं, क्यों न कर लूँ प्रणाम !

यह मगर क्या हुआ ?
तुकों को छलना हुआ !
जमे नहीं मतलब
पेन का चलना हुआ !
पूर्वी फिर कहाँ गई ? कहाँ गई पूर्वा
दूब तो ओझल हुई, हाथ आई दूर्वा

चालू करूँ ट्रांजिस्टर ?
लाहोर, पेकिङ्, मास्को, बी० बी० सी०...
जी हाँ, वे भी सुनवाते हैं बंबइया गीत फिल्मी···
जी हाँ, रात को साढ़े ग्यारह के बाद...
जी हाँ, चालू किया ट्रांजिस्टर···
मल्का-ए-तरन्नुम नूरजहाँ गा रही
जी हाँ, सुनिए बन्धु, आप भी
जी हाँ पूर्वी तो सो गई
सो गई पुरबिया...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढेरसारे नाम हैं उसके तो...
जी हाँ, बस करूँ अब इस वक्त
मल्काए-तरन्नुम नूरजहाँ गा रही
"मिल के खलोइए, मिलके खलोइए...
और अपना तो अन्तर्मन
चेतना की भीतरी परतों में
अब भी गुनगुनाता है—
गुनगुनाता रहेगा शायद देर तक—
"मात्राएँ दीर्घ हैं, क्यों न कर लूँ प्रणाम ?
बच्चों की लाड़ को चाहिए ज्यादा ही दाम !
बोल री पूरब, यहाँ खीझ का क्या काम
छन्दों में तो मुश्किल से आएगा य' नाम
मात्राएँ दीर्घ हैं, क्यों न कर लूँ प्रणाम ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरकाऊ सीढ़ियाँ

विद्युत्-अभियंत्रित सरकाऊ सीढ़ियाँ
चढ़ नहीं पा रहीं पुरानी पीढ़ियाँ
उतर नहीं पा रहीं पुरानी पीढ़ियाँ
खौफनाक लगती हैं सरकाऊ सीढ़ियाँ
दे सकतीं धोखा सरकाऊ सीढ़ियाँ

चकित-भ्रमित खड़ा हूँ
प्रौढ़ हूँ, बड़ा हूँ
दसियों-बीसियों
चढ़ रहे, उतर रहे
उत्सुक ग्रामीण तरुण
चपल-तरल बालिकाएँ
वो देखो, वो देखो, चढ़ गए कैसे
वो देखो, वो देखो, उतर गए कैसे
सरकाऊ सीढ़ियाँ !

यह लो, यह लो !
मैं भी चढ़ता हूँ सरकाऊ सीढ़ियाँ
बच गया हूँ डिगते-डिगते
यह लो, यह लो, हँस पड़े लोग
ले आईं ऊपर मुझे भी आखिर
विद्युत्-अभियंत्रित सरकाऊ सीढ़ियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाहक ही सहमा, नाहक ही ठिठका
कितनी सरल हैं
त्वरित हैं, तरल हैं
विद्युत्-अभियंत्रित सरकाऊ सीढ़ियाँ

सवेरे-सवेरे बतला तो दिया था
हर्ष ने, विमल ने...
"बाबा, देखने की चीज है
बड़ा ही मजा आएगा आपको !"
और, सचमुच खूब मजा आया...
फिर तो यूँ ही बार-बार-बार
चढ़ा मैं, उतरा मैं
सरकाऊ सीढ़ियाँ
भड़काऊ सीढ़ियाँ

ऑटोमेशन- द्वेषी आदिमानव-सुलभ गुस्सा
तोड़ दे न रीढ़ कहीं
इन सरकाऊ सीढ़ियों की
डाल दे न कहीं चुपचाप पेट्रोल का फाहा
इलेक्ट्रिक प्लांट की कुक्षि के अन्दर
उधर, पिछवाड़े से होकर प्रविष्ट, अलक्षित...
अंग-अंग में दौड़ गई है सिहरन
मनाता हूँ खैर मन ही मन
विद्युत्-अभियंत्रित संसरणशील
इन सोपान पंक्तियों का...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिन्धु नद

हे सिन्धु, देख तव अमियधार
गदगद होता हूँ बार-बार
तुम आए कल कल छल छल कर
उस मानसरोवर से चलकर
पच्छिम हटकर फिर उत्तर से
हिमगिरि के वक्षस्थल पर से
हे सिन्धु, देख तव अमियधार
गदगद होता हूँ बार-बार

हम पराधीन, तुम हो स्वतंत्र
सिखलाते जाओ नया मंत्र
हे हिमगिरि के साकार भाव
डूबे न हमारो भरी नाव
तुम बने रहो यों उदासीन
दिन दिन हम होते जायँ क्षीण
अपनी निधि, अपना अमृत द्रव
अपना जीवन, बस सबका सब
लेकर पच्छिम की ओर बहे
हे निर्मम, तुमको कौन कहे
हो गया हाय, पूरब उजाड़
खिंच गया खून, रह गया हाड़
मत जाओ मिलने सागर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्तोष करो इस सागर से
हम क्षुद्र सही, पर भाव-भरित
तेरे अपने हैं, महासरित
हम प्यासे हैं हम रहे तरस
इस शुष्क हृदय को करो सरस
गंगा जमुना औ' ब्रह्मपुत्र
कृष्णा कावेरी औ' रेवा
अपने को करती हैं कृतार्थ
इस पुण्य भूमि की कर सेवा
पर, सिन्ध, तुम्हारी बात और
आख्यान और इतिहास और
इस महादेश की जनता का
तेरे प्रति है विश्वास और
हे दूत, महान हिमालय के
सन्देश सुनाना भूल गये
तुम बने इधर चिर मूक, उधर
लाखों फाँसी पर झूल गये
हे महामहिम, बस हमको तो
वह याद जमाना आता है
इस तट पर वीर सिकन्दर-सा
कोई दीवाना आता है
तेरी धारा में डूब लगा
देता है अर्घ जुपीटर को
आगे रक्खे हैं स्वर्ण पात्र
हैं आँख उठी कुछ ऊपर को
× × ×
उस नृप की विश्वविजयिनी वह
सेना होकर के जब हताश
खाली हाथों ही लौटी थी
तब का तेरा हिमधवल हास—
अंकित है अब तक भली भाँति
इस दिव्य भूमि के कण-कण में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीलाएं क्या-क्या हुईं नहीं
तेरे इस अद्‌भुत प्रांगण में
रिपु का अप्रतिहत रणोन्माद
आकर जिसने कर दिया शान्त
वह चन्द्रगुप्त है खेल चुका
तेरे समक्ष नाटक सुखान्त
बोलन की घाटी इधर, उधर—
सतलज का आँचल है गवाह
अपनी बाहों से दुश्मन की
तुमने रोकी है सदा राह

मणि मोती सोना चाँदी के
शाही परियों के, बाँदी के
भारी भारों से लदे हुए
जाँचे परखे औ' सधे हुए
टन्-टन् करती घंटी वाले
ऊनी नकेल कंठी वाले
सौ-सौ ऊँटों की वह कतार
तुमने देखी है कई बार
अपनी छाती पर से जाते
ईरान अरब की ओर अरे !

तेरे तट पर कुछ अर्से तक
जिनके शासन का दौर चला
उन मीरों और कल्हरों को
कैसे सकते तुम भूल भला ?

है याद तुम्हें वह नरनाहर
जिसको सब कहते थे दाहर
आजानुबाहु आयतस्कन्ध
सुन्दर ग्रीवा, सुगठित कबन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नासिका तुंग लोचन विशाल
ऊँचा इतना जितना कि साल
चौड़ी छाती उन्नत ललाट
पौरुष की वह प्रतिमा विराट
आदिम मानव करता होगा
तेरी धारा में जल - विहार
बल्कलवसना मानवी उसे
रह-रह लेती होगी निहार—
तट पर कृष्णाजिन को थामे
अरुणोदय की शुभ वेला में
आदिम मानव करता होगा
जब इस धारा में जल विहार !

तेरे तट पर दाएँ-बाएँ
चरती होंगी कपिला गायें
चरते होंगे सित असित मेष
तज स्वर्गिक सुख, तज यज्ञ भाग
तज तज कर अपना हव्य भाग
वे इन्द्र वरुण अर्यमा आदि
उन सीधे सादे पशुओं का
बन जाते होंगे सहज बन्धु—
धर चरवाहों का सरल भेष !
चरते होंगे सित असित मेष
चरती होंगी कपिला गायें
तेरे तट पर दाएँ बाएँ

वह विश्वविजय की प्रबल प्यास
वह ऋचापाठ वह मंत्रगान
तेरे हिय-पट पर अंकित है
उपनिषदों का वह आत्म-ज्ञान
ऋक् यजुष् साम अथर्व
संस्कृति का वह उद्योग पर्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्पना यहीं अंकुरित हुई
चेतना यहीं संस्फुरित हुई
तुम धन्य मोहनजोदड़ो, धन्य
वह विश्व विदित भग्नावशेष
तव अंचल में संचित शत-शत
भाषा - भूषा औ भाव - भेष

मृगयाओं से थक थक करके
पीते होंगे छक छक करके
सुस्वादु सोमवल्ली कषाय
उथले चषकों में ढाल-ढाल
फिर शृंगविनिर्मित धनु सँभाल
भर तरकस में विषलिप्त तीर
तेरी कछार के झाड़ों में
गुल्मों में और दराड़ों में
दानवों दस्युओं को खोजा
करते होंगे वे आर्य वीर
भर तरकस में विषलिप्त तीर
औ' शृंगविनिर्मित धनु सँभाल

तेरी धारा में नहा नहा
नव जपा कुसुम के फूल वहा
कुछ खड़े-खड़े ही स्रोत मध्य
तो कुछ तट पर ही बैठ-बैठ
ऋषिगण संध्या - वंदन करते
शुक चंचुसदृश लाली वाले
या सोने की थाली वाले
शिशु रवि का अभिनंदन करते
ऋषिगण - संध्या वंदन करते !
इक तारा पर गाने वाले
सूफ़ी सन्तों से तान मिली !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम जड़ थे, कविवर शाह धन्य
जिनसे तुमको यह जान मिली !

असुर वैदिक फिर बौद्ध-जैन
इस्लाम सिक्ख सबको देखा
तेरे इस बहते पानी पर
क्या खींच सका कोई रेखा

कुछ भेद नहीं, करते आए
स्वागत गुरुओं का, पीरों का
धोते आए हो हे उदार
तुम घाव सभी के तीरों का
हे सिन्धु देख तव अमियधार
गदगद होता हूँ बार - बार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहती है जीवन की धारा !

बहती है जीवन की धारा !
मलिन कहीं पर विमल कहीं पर,
थाह कहीं पर अतल कहीं पर।
कहीं उगाती, कहीं डुबोती,
अपना दोनों कूल किनारा।
बहती है जीवन की धारा !
तैर रहे कुछ, सीख रहे कुछ,
हँसते हैं कुछ, चीख रहे कुछ।
कुछ निर्भय हैं लदे नाव पर,
खेता है मल्लाह बिचारा।
बहती है जीवन की धारा !
साँस-साँस पर थकने वाले,
पार नहीं जा सकने वाले।
उब-डुब उब-डुब करने वाले,
तुम्हें मिलेगा कौन सहारा।
बहती है जीवन की धारा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुलबुले

कवि......
हे बुद्बुद् प्रियदर्शी, फिर भी
उब-डुब उब डुब-करने वाले !
किस मस्ती में झूम रहे तुम
अपने को यों भूले भाले ?

बहुरंगी टोप लगाए तुम
चंचल तरग तुरंगों पर चढ़
मृदु मन्द अनिल से खेल रहे
पीछे हट-हट आगे बढ़-बढ़

ये मन्द अनिल औ' लघु तरंग
जिनके बल पर तुम नाच रहे
लो इन्हें परख, फिर मत कहना
ये झूठ रहे, ये साँच रहे !

है अपने जीवन की लघुता
अति लघुता का भी ख्याल तुम्हें ?
यह हँसी खुशी यह अलमस्ती
कर दे न कहीं बेहाल तुम्हें !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद् बुद्...
हम क्षणिक सत्य, पर, जीवन का
किंचित् भी हम को मोह नहीं
कुछ नफा नहीं, नुकसान नहीं
आरोह नहीं, अवरोह नहीं

आए औ' इधर उधर देखा
नाचे खेले प्रस्थान किया !
हम पल के मेहमान वृथा
तूने कवि हम पर ध्यान दिया !

जिन उन्मद प्रभुओं के आगे
मानवता सिसकी भरती है
खानों में, अतल समुद्रों में
दब मरती, डूबा करती है

जिनकी दृढ़ मुट्ठी में दबकर
कर रहे श्रमिक जन आर्तनाद
जा, उधर देख, उनको समझा
जिनको न आ रही मौत याद !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब मैं तुम्हें भूल जाता हूँ

पहन शुक्र का कर्णफूल जब
पीछे की नीरव घड़ियों में
रजनी को निखरा पाता हूँ
नील गगन के नक्षत्रों को
जब अविरल बिखरा पाता हूँ
तब मैं तुम्हें भूल जाता हूँ

जब ऋतुओं के संधिकाल में
विकृति वायु से आहत होकर
आकुल क्षुब्ध और उद्वेलित
सागर की उत्ताल तरंगें
वसुधा की मेखला चूमतीं
चतुर नाविकों की नौकाएँ
जब उन पर निःशंक झूमतीं
तब उनका साहसमय जीवन
देख - देख मैं ललचाता हूँ
फिर तो तुम्हें भूल जाता हूँ

रंग-बिरंगी फूलों वाली
हरियाली से ढकी पहाड़ी
देवदारु की, सरो-चीड़ की
कोसों फैली हुई कतारें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन ऊंचे हिममय शिखरों के
अद्भुत और विचित्र नजारे
इन दृश्यों के बीच बैठ जब
कालिदास के पद गाता हूं
तब मैं तुम्हें भूल जाता हूं

जब अबोध शिशुओं से घिरकर
मुदित चित्त बैठा होता हूं
बिना हेतु ही वे हंस पड़ते
मैं भी कुछ मुस्का देता हूं
जब सहस्रदल कमलों का सा
खिला हुए उनका मुख-मंडल
तनिक ध्यान में भी लाता हूं
तब मैं तुम्हें भूल जाता हूं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षमा प्रार्थना

क्या करेगी कल्पना जब, हृदय ही सूखा पड़ा है
और मेरा कवि ? अरे, यह भाव का भूखा पड़ा है !
रूक्ष, नीरस हो गया हूँ;
सजनि क्या था और क्या हूँ ?
भाग आया एक दिन मैं फोड़कर तक़दीर तेरी
ठीक; लेकिन—सामने है आज तो तसवीर तेरी !
देख, अन्तस्तल विकल है;
सजनि ये आँखें सजल हैं;
मार्जना कर दोष मेरे !
बहुत कुछ अ-विहित किया है; बहुत कुछ अनुचित किया है;
क्षमा कर दे मुदित मन से, क्योंकि तू सर्वंसहा है !
भूल जा अपवाद हो यदि;
सजनि अब तक याद हो यदि;
राग मेरे; दोष मेरे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुरोध

छेनी और हथौड़ा लेकर
मैंने निर्मित की पाषाणी
तुम निज मधुमय अंगुलियों से
छू कर इसमें दे दो वाणी

जीर्ण कुटी के रिक्त दीप में
मैंने जाकर स्नेह दिया
बहुत हर्ष होगा यदि तुमने
इसे जलाकर दीप्त कर दिया

भावों को सीमित कर मैंने
कड़ी जोड़ ली, गीत बनाया
रोम-रोम होंगे कृतज्ञ ये
यदि तुमने थोड़ा भी गाया

इस साधक के चिता चैत्य पर
आओ, शीतल हाथ फेर दो
चरण कमल की ये पंखड़ियाँ
मैं लाया हूँ, तुम बिखेर दो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तारे

फीके - फीके से ये तारे !
पहर रात है, ऊँघ रहा यह फीका शशि धौली चौदस का,
चित्रा अनुसंधान कर रही नील गगन में निर्मल रस का,

...झिलमिल झिलमिल
थके हुए पग, पका हुआ दिल।
क्या न मिलेंगे कभी, अभी जो
दूर - दूर पर हैं बेचारे ?
फीके - फीके से ये तारे !
एक दूसरे से विरहित हो सब के सब चुपचाप खड़े हैं।
जाने इन पर किस दुर्दम दुर्वासा के अभिशाप पड़े हैं ?

तितर-बितर हैं, अलग-अलग हैं
जाने चिन्तित हैं कि सजग हैं
कौन वस्तु वह, कौन व्यक्ति वह
जिसको खोज-खोज कर हारे ?
फीके - फीके से ये तारे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरल कनक

यह मिट्टी का तेल नहीं है, तरल कनक है,
प्रकृति-विजय के महाकाव्य का यही जनक है,
यह धरती की बड़ी कोख गरमाने वाला,
ताल तलइयों में बूलबुले उठाने वाला,
यह जादू का अर्क, रसायन खुशहाली का,
यह अक्सीर इलाज गरीबी-पामाली का,
यह है भौतिक स्नेह, किसी की यह न सनक है,
यह मिट्टी का तेल नहीं है, तरल कनक है!

चमकेगी विज्ञान और संस्कृति की आभा,
गहरी होगी कोटि-कोटि गालों की आभा,
मुखरित होंगे यंत्र, प्रगति को पंख लगेंगे,
सुलभ रहेगा सुख, जन-जन के भाग्य जगेंगे,
मुझे किरासिन के कीर्तन की मिली भनक है,
यह मिट्टी का तेल नहीं है, तरल कनक है!

तेलकूप के रजत-राग की करें वंदना,
घासलेट की गंध नियति को करे चन्दना,
अवनि और अम्बर में जन-जन निर्भय बिहरे,
सागर का तल-सैकत इन हाथों में सिहरे,
युग-लक्ष्मी की गति में कैसी झनक-झनक है,
यह मिट्टी का तेल नहीं है, तरल कनक है!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेंटिमेंट...

सेंटिमेंट...
एमोशन...
मूड...
बहुत बड़े प्रतिष्ठानों का
एक अदना-सा टेबुल भी
मुस्करा देगा इन शब्दों पर—
सेंटिमेंट !
एमोशन !
मूड !
भला, य' भी कोई बात हुई ?
जहाँ, मरने की भी फुर्सत
नहीं होती है किसी के पास
वहाँ बैठकर कोई कविताएँ रचेगा !
यह अनहोनी कैसे हो जाएगी ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबंध

पेट ही पेट है
डोलता फिरता हूँ
माथे की टोह में—
जाने कब तक भटकना पड़ेगा ?
मैं तो कवंध हूँ ।

चलते-चलते काठ हो गये पैर
काँप-काँप उठते हैं मलिन लोमश हाथ
ठस पड़ गया है रूखी त्वचा का स्पर्श-बोध
मुझे नहीं मिलेगा
क्या कोई दशरथनन्दन ?
त्रेता क्या सचमुच गुजर गया ?
मैं क्या भटकता रहूँगा आकल्प ?
पेट ही पेट है
मैं तो कवंध हूँ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह फिर जी उठी

पहाड़ी प्रदेश, ऊभड़-खाभड़ !
छोटा नागपुर या मध्यप्रदेश का ऐसा ही
कोई इलाका...
छोटी-सी एक नदी
अपने आप में मस्त
हाँ, पहाड़ी नदी !
हरे-भरे किनारे
इधर भी जंगल, उधर भी जंगल !
जामुन, गूलर, पलाश, आम, महुआ, नीम...
सभी देखते हैं अपना-अपना चेहरा
—नदी के पानी में !
रात को झाँकते होते हैं आसमान के तारे
जगमगाती है दिन के वक्त
उड़ते पंछियों की परछाइँ !
नदी क्या है, आईना है !
अन्दर तैरती हैं मछलियाँ, बाहर बत्तखें...
कछारों में बगुलों की कतार
जाने, क्या देख रहे हैं महाशय जी, ध्यान
जमाकर !
गाँव भी आबाद हैं बीच-बीच में...
नदी के दोनों ओर...
बाँस और लकड़ी के कामचलाऊ पुल...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने आप बना लेते हैं लोग ऐसे पुल !

•

लगाते हैं छलांग छोकरे
बहते पानी के अन्दर !
डुबोकर पैर, बैठी रहती हैं
देर-देर तक छोकरियाँ तट की शिलाओं पर !
सुनती हैं कहानियाँ
अलापती हैं कड़ियाँ लोकगीत की
डरता नहीं है कोई इस नदी से
प्यार ही प्यार मिलता है इसको
शिकार भी ख़ुश
शिकारी भी ख़ुश
अमीर भी ख़ुश
गरीब भी ख़ुश
अमृत होता है एक-एक बूंद पानी फसलों की
खातिर !
कलियों को मिलती है सतरंगी रौनक
लेते हैं अँगड़ाइयाँ मोती—
फलियों के अन्दर, छीमियों के अन्दर !
ढलते हैं स्वादों के जादू फलित रसों की
रूह में !
नाच की थिरकन...
गीत का अलाप...
प्यार की सिहरन...
जीत का हुलास...
क्या नहीं है वह ?
माँ भी है, बेटी भी है, बहन भी है,
बहू भी है !
सहेली भी है, प्रेयसी भी है !
साथिन है सुख-दुख की, सब कुछ है !
क्या नहीं है वह अपनी जनता के लेखे !

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाय, यह क्या हुआ !
चढ़ गया घमंड का बुख़ार इस नदी को...
अकड़ क्यों गई यह आख़िर ?
'नदी रानी, नदी रानी, कैसी हो तुम !
क्या हुआ तुमको ?'
'ना, ना, कुछ न बोले कोई मुझ से...
मैं नहीं देती जवाब किसी के सवाल का !...'
'मालूम भी तो पड़े आखिर
किसने क्या कहा है तुम से, नदी रानी ?
बतला भी तो दो उसका नाम !
नहीं बतलाओगो ? नहीं ?'
'मुझे चिढ़ा रहा था नीम का बिरवा !
बना रहे थे मुँह—
जामुन और गूलर के बौने पेड़ !
मार रही थी मुझे ताने लचकीली बेंत !
अभी कल की बात है,
मार दिया था मुझे कंकर एक छोकरी ने
फूट ही जाती आँख...
बच गई मैं तो !
पहचानती हूँ भलीभाँति
मैं उस छोकरी को
झुला चुकी हूँ घंटों उसे
अपनी लहरों के झूले पर !
शादी क्या हुई,
मिजाज ही उलट गया दुष्ट का !
क्यों मुझे छेड़ेगी वो ?
परसों नहाने आया नौजवान आदिवासी
डाल गया मुरझाए फूलों की बासी माला
सुलगती रही सारी रात मैं ग्लानि के मारे...
ठीक है, ठीक है, छोकरी के साथ
नाचे थे तुम
मिलाकर क़दमों से क़दम, डालकर गल-बाँही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुथी रही थी यह माला उसी के जूड़े में
सारा दिन !
मगर; चढ़ा गए मुझी पर क्यों तुम
अपने प्यार का यह जूठा प्रसाद ?
ओह, मैं तुमको भी झेलूं !
और, तुम्हारी मुहब्बत के नख़रे भी !
भई, इतना तो नहीं पार लगेगा मुझसे !
अभी उस रोज आ गए झूमते-झामते
एक सांड़-साहब...
धंस गये बे-खटके मेरी धार के अन्दर
मिटाया तन का ताप
बुझाई रग-रग की प्यास
देखते रहे गौर से अपने टूटे सींग, परछाइं
के अन्दर !
फिर जाने ललकारते रहे किसको !
फिर जाने दुहराते रहे विजय के कैसे-कैसे नारे !
देखना नहीं चाहती मैं इस मूर्ख को...
नाहक मुझे परेशान करता है बीच-बीच में
आकर !
किनारे की मिट्टियां मुलायम
उकेर-उकेर जाता है खुरों और सींगों से !
हाय राम, मैं क्या करूं...
नहीं, मुझे फुसलाओ मत !
पहचानती हूं तुम सबको !
धोखा नहीं दे सकता मुझको कोई...
हां, मैं पहचानती हूं एक-एक को !
नहीं गलाऊंगी अब मैं अपनी देह किसी
की ख़ातिर !
बन्द कर दूंगी मैं तो अब वहना ही
क्या कर लेगा मेरा कोई
रहूंगी अब मैं जहां की तहां
गर्ज हो किसी को तो सामने आए,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखूंगी मैं !'
'अरे, नहीं नदी रानी !
ऐसा नहीं, ऐसा नहीं, ऐसा नहीं...
रंज मत होना नदी रानी !'
'नहीं, मैं अब नहीं मानूंगी किसी की बात !'
'नहीं ?'
'नहीं !'
'नहीं ?'
'नहीं !'
'नहीं ?'
'नहीं ! नहीं ! नहीं !'

●

नदी ने समेट लिया अपने को !
रुक गए प्रवाह...
ग़ायब हो गईं लहरें...
फैलने लगा सेवार अन्दर ही अन्दर
बदलती गई पानी की रंगत
कहीं और जाने लगे प्यासे पशु-पक्षी
टहलने-बुलने लगे कीड़े
झाँकना तक छोड़ दिया छोकरों-
छोकरियों ने...
पाँक और पाँक और पाँक !
कीचड़ और कीचड़, और कीचड़ !
वही कूल, वही किनारा...
लेकिन प्राण ही गए थे सूख...
खड़े थे उदास तटवर्ती पेड़
दिखती थी रेत ही रेत
मर गई थी नदी
बिछी थी वालुकामय लाश !
मच गया हल्ला सारे प्रदेश में
मर गई थी नदी !
उमड़ पड़े जगह-जगह लोग...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मर गई थी नदी !
दुखी था किसान...मर गई थी नदी !

●

फिर से आ गई जान नदी के अन्दर
कई महीने बाद...
बादलों से कहा था सूरज की किरणों ने;
सूरज की किरणों से कहा था हवा ने !
हवा से कहा था मेढकों ने !
झेलना पड़ा था नदी का घमंड बेचारे
मेढकों को...
झूठा घमंड ! फ़िज़ूल का घमंड !
डाल दिया बादलों ने
नदी के अन्दर जीवन चुपचाप एक रात !
डूब गए दियारे छोटे-मोटे
टूट गईं हदें, टूट गए बाँध !
फिर से हो गया चालू पानी का प्रवाह
किनारों के बीच से होकर
फिर से लगीं नाचने लहरें
फिर से लगे मचलने झाग
फिर से फैल गई ख़ुशख़बरी इर्द-गिर्द
फिर से शुरू हुआ लोगों का आना-जाना
फिर से आने लगे पखेरू
कछारों में दीख पड़ी फिर से
वन्य जंतुओं के पैरों की छाप
छेड़खानी करने लगी नदी फिर उनसे !
फिर से लगी उछालने वह छोटी-छोटी
मछलियाँ
फिर से जगमगा उठे चाँदी के झमके
लहरिया मेहराब पर !
फिर से लगे उलीचने पानी एक-दूसरे पर
छोकरे और छोकरियाँ
मुस्कराने लगे फिर से किनारों के जंगल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर से पा गए आईना अपना
जामुन और नीम और गूलर और पलाश !
कितनी ख़ुश हैं
तटवर्ती गाँवों की क्वाँरी लड़कियाँ !
दोने भर-भर बहा रही हैं जलते दीपक !
किस ओर चला गया है जाने
बहकर नदी का घमंड !
कभी नहीं सूखेगी अब यह नदी
बहती रहेगी सदैव यह चंचल सरिता
चंचल होगी तो होगी, जानमारू नहीं होगी !
बाँटती रहेगी छोटी-छोटी ख़ुशियाँ
छोटी-छोटी लहरों के ज़रिये !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाएँ मीठे वचन कहाँ से

मास्को बर्लिन प्राग सोफिया
हो आए हैं बीस बार वे
मूक क्रान्ति की अमृत लहरियाँ
लाए हैं घर में उतार वे

भूंक-भूंक कर हम तो हारे
बैठे रहते हैं मन मारे
लाएँ मीठे वचन कहाँ से
फीका मन है, चिन्तन खारे

बन पाऊँ यदि भगत बेहया
लोग कहेंगे : सिद्धि पा गया
'जन-हित-चिन्तन' की बीमारी
छूटे, पाऊँ जनम् फिर नया

आएँ, नक्सलपंथी आएँ
कोटि कोटि मुख रौनक पाएँ
अपनी बुढ़भस भी खलती है
आवें तो उनका गुण गाएँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आएं नक्सलपंथी आएँ
वड़े बड़ों के भूत भगाएँ
युग-युग से संचित कूड़ों में
निर्मम होकर आग लगाएँ

आज़ादी के भ्रम में हमको
बाइस-तेइस साल हो गए
आग उगलते थे जो साथी
चिकने उनके गाल हो गए

कुछ मुखिया, कुछ बने विधायक
कुछ हो वैठे लोकसभाई
बोल बड़े हैं नीयत ओछी
रग-रग में घुल रही मलाई

जात-पाँत के गिरधारी है
नारों के ही नागनथैया
प्रजातन्त्र की गोल झील में
संविधान की खेते नैया

मास्को बर्लिन प्राग सोफिया
हो आए हैं बीस बार वे
मूक क्रान्ति की अमृत लहरियाँ
लाए हैं घर में उतार वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवी, तुम तो काले धन की बैसाखी पर टिकी हुई हो

लाभ-लोभ के नागपाश में
जकड़ गए हैं अंग तुम्हारे
घनी धुंध है भीतर-बाहर
दिन में भी गिनती हो तारे

नाच रही हो, ठुमक रही हो
बीच-बीच में मुस्काती हो
बीच-बीच में भवें तान कर
आग दृगों से बरसाती हो

रंग लेपकर, फूंक मारकर
उड़ा रहीं सौ - सौ गुब्बारे
महाशक्ति के मद में डूबीं
भूल गई हो पिछले नारे

चुकने ही वाली है अब तो
डायन की बहुरूपी माया
ठगिनी तू ने बहुत दिनों तक
जन-जन को यों ही भरमाया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसी प्रतिमा, जैसी देवी
वैसे ही नटगोत्र पुजारी
नए सिंह, महिषासुर अभिनव
नए भगत श्रद्धा-संचारी

ग्रह उपग्रह सब थकित-चकित हैं
सभी हो रहे चन्दा मामा
चन्दारानी की सेवा में
लिखा सभी ने राजीनामा

कांति खो गई शरद्-चन्द्र की
चन्द्र-मुखी क्या, चन्द्रमुखी हो
रवि सहस्र-करें दुखी, तुम्हारे
लाख लाख कर टैक्स-रुखी हो

अलंकार सब मलिन हो गए
विरस हो गया स्वाद रसों का
महक रही हो, चहक रही हो
सत चूसा भोंगती मसों का

मँहगाई का तुझे पता क्या !
जाने क्या तू पीर पराई !
इर्द-गिर्द बस तीस-हजारी
साहबान की मुस्की छाई !

तुझ को बहुत-बहुत खलता है
'अपनी जनता' का पिछड़ापन
महामूल्य रेशम में लिपटी
यों ही करतीं जीवन-यापन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवी, तुम तो काले धन की बैसाखी पर टिकी हुई हो

लाभ-लोभ के नागपाश में
जकड़ गए हैं अंग तुम्हारे
घनी धुंध है भीतर-बाहर
दिन में भी गिनती हो तारे

नाच रही हो, ठुमक रही हो
बीच-बीच में मुस्काती हो
बीच-बीच में भवें तान कर
आग दृगों से बरसाती हो

रंग लेपकर, फूंक मारकर
उड़ा रहीं सौ - सौ गुब्बारे
महाशक्ति के मद में डूबीं
भूल गई हो पिछले नारे

चुकने ही वाली है अब तो
डायन की बहुरूपी माया
ठगिनी तू ने बहुत दिनों तक
जन-जन को यों ही भरमाया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसी प्रतिमा, जैसी देवी
वैसे ही नटगोत्र पुजारी
नए सिंह, महिषासुर अभिनव
नए भगत श्रद्धा-संचारी

ग्रह उपग्रह सब थकित-चकित हैं
सभी हो रहे चन्दा मामा
चन्दारानी की सेवा में
लिखा, सभी ने राजीनामा

कांति खो गई शरद्-चन्द्र की
चन्द्र-मुखी क्या, चन्द्रमुखी हो
रवि सहस्र-करें दुखी, तुम्हारे
लाख लाख कर टैक्स-रुखी हो

अलंकार सब मलिन हो गए
विरस हो गया स्वाद रसों का
महक रही हो, चहक रही हो
सत चूसा भोंगती मसों का

मँहगाई का तुझे पता क्या!
जाने क्या तू पीर पराई!
इर्द-गिर्द बस तीस-हजारी
साहबान की मुस्की छाई!

तुझ को बहुत-बहुत खलता है
'अपनी जनता' का पिछड़ापन
महामूल्य रेशम में लिपटी
यों ही करतीं जीवन-यापन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठगों - उचक्कों की मलिकाइन
प्रजातंत्र की ओ हत्यारी
अबके हमको पता चल गया
है तू किन वर्गों की प्यारी

जन-मन भरम रहा है नकली
मत - पत्रों की मृग-माया में
विचर रही तू महाकाल के
काले पंखों की छाया में

सौ कंसों की खीझ भरी है
इस सुरसा के दिल के अन्दर
कंधों पर बैठे हैं इस के
धन-पिशाच के मस्त कलन्दर

गोली - गोले, पुलिस - मिलिटरी
इर्द - गिर्द हैं घेरे चलते
इसकी छलिया मुस्कानों पर
धन - कुबेर के दीपक जलते

संविधान का कवच पहन कर
देखो कैसे ठुमक रही है
श्रमिकों के बोनस पर बिगड़ी
बमक रही है, हुमक रही है

बढ़ा काफिला वह दमदम से
सड़क साफ है राजभवन का
'रानी आई', 'रानी आई'
भिखमंगों का माथा ठनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़े किनारे उचक रहे हैं
बुद्धू के नाना मुंह बाए
देवी आई है, राशन में
शायद अबकी गेहूँ आए

कूड़ों के अम्बार जमा हैं
महामार्ग के गलियारों में
सड़क स्वच्छ थी छप जाएगी
शायद कल के अखबारों में

वृद्ध-वधिर 'बाबा' के कंधों
पर बैठी बबुनी गुड़िया-सी
निकल गई है बड़ी सड़क से
पुतली चन्दन की पुड़िया-सी

इस नाटक—इस नौटंकी—पर
सुने ठहाके मैंने उसके
पगली है नाचा करती है
सचिवालय के अन्दर घुसके

तू भी देवी वह भी देवी
मैं उसको ही नमन करूँगा
अपनी मारुति-फारुति रख तू
मैं तो उसके चरण धरूँगा

अपने वर्ग - हितों के खातिर
तूने बड़े प्रपंच रचे हैं
दिखा चुकी तू सभी करिश्मे
अब दो ही दिन शेष बचे हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीभ घिस गई रटते-रटते
जनता जनता जनता जनता
ऐसी नकली हमदर्दी से
देखो मैडम, काम न बनता

अपने भोलेपन के चलते
माई ! हम तो मार खा गए
तेरे पालित पशु फसलों की
एक - एक पत्ती चबा गए

दीन जनों का लहू पी रहीं
इस पचास में, इस पचपन में
कौन कहेगा, सचमुच माँ का
दूध पिया तुम ने बचपन में

सच बतलाना, कहाँ गया अब
प्रियदर्शी वह रूप तुम्हारा
डायन सी सूखी हँसती हो
मीठा भी लगता है खारा

छाँट - छाँट कर जल्लादों को
थमा रही हो झण्डे अपने
मादा अजगर हो तुमने तो
निगल लिए हैं अंडे अपने

तिकड़म ही तिकड़म जीतेगी
क्या रक्खा है किसी नाम में
लगता, कोई और न होगा
तुम्हीं रहोगी धरा धाम में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कागज का रुपया हँसता है
मतपत्रों की खींचतान में
गुण्डा-गर्दी महायान है
प्रजातंत्र के हीनयान में

तुम जिनकी अपनी माता हो
उनके दिल-दिमाग उड़ते हैं
कीचड़ में भी इंगित पाकर
उनके पैर नहीं मुड़ते हैं

अपनी ही प्रतिमा की नकली
चमक दमक पर बिकी हुई हो
देवी तुम तो काले धन की
बैसाखी पर टिकी हुई हो

कदम-कदम पर जी कुढ़ता है
पीट रहा हूँ मैं अपना सिर
इस समाधि में उभर रहा है
चंडी का मुख-मंडल फिर-फिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पैने दाँतों वाली

धूप में पसरकर लेटी है
मोटी-तगड़ी, अधेड़, मादा सूअर...

जमना-किनारे
मखमली दूबों पर
पूस की गुनगुनी धूप में
पसरकर लेटी है
यह भी तो मादरे हिन्द की बेटी है
भरे-पूरे बारह थनों वाली !

लेकिन अभी इस वक्त
छौनों को पिला रही है दूध
मन-मिजाज ठीक है
कर रही है आराम
अखरती नहीं है भरे-पूरे थनों की खींच-तान
दुधमुँहे छौनों की रग-रग में
मचल रही है आखिर माँ की ही तो जान !

जमना-किनारे
मखमली दूबों पर
पसर कर लेटी है
यह भी तो मादरे हिन्द की बेटी है !
पैने दाँतों वाली...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पता नहीं, दिल्ली की देवी गोरी है या काली

तानाशाही तामझाम हैं
सोशलिज्म का नारा !
पार्लमेंट पर चमक रहा है
मारुति का ध्रुवतारा !
तेरी पुलिस, मिलिटरी तेरी
तेरे गोली - गोले
हिंसा की बहती गंगा में
माँ, तू आँचल धो ले !
तरुणों की सौ-सौ कलेजियाँ
तुम पर करूँ निछावर
बना रहे दरबार, रात-दिन,
मंत्र पढ़ूँ मैं शावर
ठौर-ठौर पर भीख माँगती
बुढ़िया भारत - माता !
पता नहीं, भारत पुत्री से
क्या है उसका नाता !
नए राष्ट्र की नव दुर्गा है
नए खून की प्यासी
नौ मन जले कपूर रात-दिन
फिर भी वही उदासी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लूट पाट की काले धन की
करती है रखवाली
पता नहीं, दिल्ली की देवी
गोरी है या काली !

चार-मुखी है, वचन बदलती
यों ही एक-मुखी है
इस छलिया माई से अब तो
जनता बहुत दुखी है

तानाशाही तामझाम है
सोशलिज्म का नारा...
पार्लमेंट पर चमक रहा है
मारुति का ध्रुवतारा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भला और क्या चाहिए

सम्पूर्ण क्रान्ति—
मुर्गा-संपर्क—शून्य मुर्गी...
क्या, उसी का अंडा तो नहीं है
यह 20 सूत्रों वाला प्रोग्राम !
पौष्टिक है...सुलभ...सुपाच्य है
आकार में भी अपेक्षाकृत—
कुछ बड़ा ही तो है !
बेचारी जनता को भला—
और क्या चाहिए था ?
हमको और आपको
उनको और इनको
भला और क्या चाहिए था ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोर न होगा...उल्लू होंगे !

खूब तनी हो, खूब अड़ी हो, खूब लड़ी हो
प्रजातंत्र को कौन पूछता, तुम्हीं बड़ी हो
डर के मारे न्यायपालिका काँप गई है
वो बेचारी अगली गति-विधि भाँप गई है
देश बड़ा है, लोकतंत्र है सिक्का खोटा
तुम्हीं बड़ी हो, संविधान है तुम से छोटा
तुम से छोटा राष्ट्र हिन्द का, तुम्हीं बड़ी हो
खूब तनी हो, खूब अड़ी हो, खूब लड़ी हो

गांधी-नेहरू, तुम से दोनों हुए उजागर
तुम्हें चाहते सारी दुनिया के नटनागर
रूस तुम्हें ताकत देगा, अमरीका पैसा
तुम्हें पता है, किससे सौदा होगा कैसा
ब्रेजनेव के सिवा तुम्हारा नहीं सहारा
कौन सहेगा धौंस तुम्हारी, मान तुम्हारा
हल्दी, धनियाँ, मिर्च, प्याज सब तो लेती हो
याद करो औरों को तुम क्या-क्या देती हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौज, मजा, तिकड़म, खुदगर्जी, डाह, शराफत
बेईमानी, दगा, झूठ की चली तिजारत
मलका हो तुम ठगों-उचक्कों के गिरोह में
जिद्दी हो, बस, डूबी हो आकंठ मोह में
यह कमजोरी ही तुमको अब ले डूबेगी
आज नहीं तो कल सारी जनता ऊबेगी
लाभ-लोभ की पुतली हो, छलिया माई हो
मस्तानों की माँ हो, गुंडों की धाई हो

सुदृढ़ प्रशासन का मतलब है प्रबल पिटाई
सुदृढ़ प्रशासन का मतलब है 'इन्द्रा' माई
बन्दूकें ही हुईं आज माध्यम शासन का
गोली ही पर्याय बन गई है राशन का
शिक्षा केन्द्र बनेंगे अब तो फौजी अड्डे
हुकुम चलाएँगे ताशों के तीन तिगड्डे
बेगम होगी, इर्द गिर्द बस गुल्लू होंगे
मोर न होगा, हंस न होगा, उल्लू होंगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग की चहल-पहल

हिंसा-अहिंसा के खटराग छोड़ो
ईंटों पर ईंटें जोड़ो
ऊबड़-खाबड़ चट्टान तोड़ो
धरती को बनाओ समतल
सुनें-देखें सभी और काम की हलचल
महसूस हो सबको नये युग की चहल-पहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके उर पर मोहन माला

उनकी विष्ठा इनका चन्दन
वह थू-थू इनका अभिनन्दन
इनकी मालिश उनकी मारें
वह धिक्कृति, इनकी मनुहारें
वह बंकिम भ्रू, इनका स्पंदन
उनकी विष्ठा इनका चन्दन

वे डाँटें, ये प्यार करेंगे
अपने को तैयार करेंगे
उनके इंगित पर भूकेंगे
ये चाटेंगे वे थूकेंगे
उनका बेड़ा पार करेंगे
वे डाँटें ये प्यार करेंगे

इनका मुँह, मुस्कानें उनकी
इनकी बंशी, तानें उनकी
उनके बाट तराज़ू इनके
उनका सिर - धड़, बाज़ू इनके
इनका कटि - तट, रानें उनकी
इनका मुँह, मुस्कानें उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके उर पर मोती-माला
उन पर सोहे शाल-दुशाला
यहाँ मशक्कत, वहाँ मुनाफा
उनके ही सिर शोभित साफा
उनकी कुंजी इनका ताला
उनके उर पर मोहन-माला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौ दिन चले अढ़ाई कोस

लाये राहु-केतु के रोग
चंद्र और शेखर संयोग
चाहेंगे वे दुगने भोग
वापस आएँगे जो लोग
लाये राहु-केतु के रोग

चरणसिंह की अन्तिम चाह
कैसे भी, पूरी हो, वाह...
लम्बे डग हैं, सँकरी राह
बड़ी जलन है, बेहद दाह
चरणसिंह की अन्तिम चाह

बनें रहें जगजीवन राम
होगा नहीं विधाता वाम
कमा चुके हैं काफी नाम
शोभित इनसे दिल्ली-धाम
बने रहें जगजीवन राम

नौ दिन चले अढ़ाई कोस
वापस क्या आएगा होश
दिखलाते हैं फिर भी जोश
फूटेगा कितना आक्रोश
नौ दिन चले अढ़ाई कोस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खटक गया दिल, हुए निढाल
सोच-सोचकर संघी चाल
हाथ-कते सूतों का जाल
गला नहीं पाएगा दाल
खटक गया दिल, हुए निढाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डेमोक्रेसी की डमी !

डेमोक्रेसी की डमी !
वो देखो, देखो,
गुफा से निकली संजय की ममी !
खिल पड़े तुम—
झटका खा गए हमी !
हुई फिर से देवी, डायन में क्या थी कमी ?
वो देखो, वो देखो,
अब न रहा चेहरा मातमी !
वो देखो, वो देखो,
गुफा से निकली संजय की ममी !

क्या तो पवनार, क्या तो बेलछी
पहुँची वो कहाँ नहीं, कहाँ न थमी !
हिम्मत तो देखो, चली गई कदम कुआँ
जे० पी० से मिलते जरा भी क्या सहमी ?
वो देखो, वो देखो,
गुफा से निकली संजय की ममी
डेमोक्रेसी की डमी...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दलबदलू बुज़ुर्ग

"दर-असल
अपन वही हैं
वही रहेंगे, हाँ, वही
न बदले हैं, न बदलेंगे
बदलते हुए दीखेंगे
फिर भी कुछ नहीं सीखेंगे
80-85-90 के बूढ़ों को ढोएंगे
उन्हीं के साये में, बापू की समाधि पर
शपथ लेंगे, फिर साल-दर-साल रोयेंगे

"ऐक्शन लेगी पब्लिक, हमारा होगा रिऐक्शन
च्वाइस रहेगी हमारी, हमारा सिलेक्शन
पटना-लखनऊ-भोपाल
वचनजाल-भ्रमजाल-महाजाल
अपन तो नेता गोत्र, चकाचक है अपना हाल-चाल
घबराये, सो स्साला; शरमाये, सो ग-ग-गधा
अपुन तो कदम-कदम है सधा
दो हैं, तीन हैं, चार हैं, पाँच हैं
पंचों के भत्ते में क्या भला आँच है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आयेंगी कामं दधीचि की हड्डियाँ
सूखेंगी स्वर्ग में संतों की चड्डियाँ
यों ही फला करेगी
कल्पवृक्ष की एक-एक टहनी
यों ही रहेगी चालू—
क ह नी-अ न क ह नी
दर-असल, अपनी तो नीयत वही है
लाभ-लोभ, भीतरघात, आदत रही है
अपनी तो नीयत वही
आदत वही है..."

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकतन्त्र के दर्पण में

अपराधों की राख मलो तुम
लोकतन्त्र के दर्पण में
बीस गुना चमकेगा मुखड़ा
फिर तो आत्मसमर्पण में
अरे हटाओ, क्या रक्खा है
गांधी जी के तर्पण में
छविरानी के हत्यारे तो
पैदा होते क्षण - क्षण में
अपराधों की राख मलो तुम
लोकतन्त्र के दर्पण में

दिल्ली की सर्दी कम होती
तंत्र-मंत्र के हीटर से
अपनी किस्मत आप मिला लो
योग-सिद्धि की मीटर से
राजघाट में बातें कर लो
यूसुफ से या पीटर से
लोकतन्त्र का जूस मिलेगा
नाप-नाप कर लीटर से
दिल्ली की सर्दी कम होती
तंत्र - मंत्र के हीटर से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागलपुर के अंधे पहुँचे
दिल्ली के अंधों से मिलने
चोट लगी तो झटका खाया
मानवता के दर्दी दिल ने
सुलग उठे खबरों के कालम
होठ लगे देवी के हिलने
हमदर्दी की बगिया जागी
नकली फूल लगे तब खिलने
स्वेटर आए नये - पुराने
कपड़े शुरू हो गये सिलने
छूकर देखा, दुख-सुख महके
जरा तसल्ली पाई दिल ने

काश तुम्हारी आँखों में भी
पड़ता वो ही गंगाजल
जिसकी खबरों से दुनिया में
मची आज भारी हलचल
सुन लो, आरक्षीगण कैसे
नारे लगा रहे 'स-कुशल'
देखो भागलपुर तक चलकर
कैसे आ पहुँचा चंबल !
अपराधों की राख मलो तुम
लोकतन्त्र के दर्पण में
बीस गुना चमकेगा मुखड़ा
फिर तो आत्मसमर्पण में !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विकल हैं, व्याकुल हैं...

पानी की संतह पर
सौ पचास भ्रमर
मचा रहे अविराम गुंजन
उनकी परेशानियाँ
देखते ही बनती हैं, सुनते ही बनती हैं...

बहुत बड़ी झील है
यहाँ-वहाँ खिले-अधखिले
सौ-सौ कमल कुमुद इठला रहे हैं
बना रहे हैं समीर को बोझिल
उनके पराग, उनके मकरन्द
लेकिन इनकी तरफ
एक भी भ्रमर कहाँ खिंच रहा ध्यान
सारे के सारे षट्पद
दूर, बहुत दूर, वहाँ काट रहे हैं चक्कर
पानी की सतह पर मचाए हुए हैं
अविराम गुंजन...
विकल हैं, व्याकुल हैं...
लेकिन वो तो निकल नहीं रहा है बाहर
80 दिनों के लिए फिर से लगा गया है गोता
झील के अतल जल के अन्दर...
जी हाँ, वो राजीव है
चापलूसों की लालसा के अनुसार
लहरा नहीं रहा है झील के सतह पर !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हजार-हजार चाटुकार भ्रमरों को चाहिए
नेहरू खानदान का प्रफुल्ल कमल
राजीव, तुम क्या सचमुच
उन्हें अन्त तक निराश ही रखोगे ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बार-बार हुए हैं लहूलुहान

(इराक-ईरान युद्ध के संदर्भ में)

सुलगे हैं बार-बार
बारूदी उल्का-पुंज
झुलसे हैं बार-बार
प्रणय-मुखर द्राक्षा कुंज
बार-बार हुए हैं लहूलुहान
अरब और फारस के जवान
उमर खैय्याम मगर इतना नहीं रोया था !
बुजुर्ग शहंशाह कभी ऐसा नहीं खोया था !
रागारुण सुन्दरियाँ बनेंगी अवश्य भिखारिनें
परस्पर कलहाक्रान्त धन-पिशाच तेल-वणिक्
गिनेंगे 'स्वगत' लाभांक, औरों को लड़ाएँगे
बढ़ा ही लेंगी अपने-अपने प्रताप क्षेत्र
छिनाल महाशक्तियाँ, घिनौनी महाशक्तियाँ
कहाँ से मिलेगा उतना सुर्मा
रह जाएँगे सुर्ख महाप्रभुओं के रक्त-विकराल नेत्र
दिखाई नहीं पड़ेंगी
हकीम लुकमान की पीढ़ियाँ
कागज पे रह जाएँगे धरे के धरे
यू० एन० ओ० के फर्मानी सूत्र वाक्य !
उमर खैय्याम कभी इतना नहीं रोया था...
बुजुर्ग शहंशाह कभी ऐसा नहीं खोया था...
झुलसे हैं बार-बार प्रणय-मुखर द्राक्षा कुंज !
सुलगे हैं बार-बार बारूदी उल्का-पुंज !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोह गोपिकाएँ

पो के आएँ
चंदन की हवाएँ
भले फिर मुड़ जाएँ
बाएँ कि दाएँ
लोह गोपिकाएँ !...
निठुराई सिखाएँ—
करतब दिखाएँ
कनक छड़ियाँ नचाएँ
कूट-नये पचाएँ
तरुण-तन चबाएँ
मेंहदी रचाएँ
भले फिर मुड़ जाएँ
दाएँ कि बाएँ
लोह गोपिकाएँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटी मछली...बड़ी मछली

अभी हाल की बात है...
एक रोज़, अरब-सागर में,
कुमारी अंतरीप के निकट,
अपने दौरे के दरम्यान
बड़ी मछली, झपाटे से छोटी मछली के करीब आई
'गुफ्तगू' वाली शैली में बोली—
"तेरे अन्दर
मौजूद हैं
परिवर्तन और विकास के तत्व...
तू खुद ही एक दिन
'बड़ी मछली' में तब्दील हो जाएगी...
तेरी 'अस्थि-धातु' के अन्दर
वे सभी 'आणविक तत्व' मैं स्पष्ट देख रही हूँ
तेरी हड्डियों पर अपने आप
मांस की गुद्दियाँ पनपने लगेंगी...
पतझर के बाद ठूंठ क्या हरा-भरा नहीं होता ?"
इतना कहकर बड़ी मछली मुंह फाड़कर
छोटी मछली के बिल्कुल निकट आ गई...
आवाज की अनुगूंज सुनाई पड़ी—
"ना, डरते नहीं प्यारी बच्ची !
"नहीं, नहीं, कतई नहीं !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अब तू आराम से इन जबड़ों के अन्दर, आ जा !
"गीता ने क्या कहा है ? भूल गई ?
"आत्मा का विनाश नहीं होता...
"आत्मा नित्य है, अ-वि-नश्वर
"नैनं छिन्दति शस्त्राणि
"नैनं दहति पावकः...
"तू मेरे उदर में पहुँचकर भी खत्म नहीं होगी...
"तेरी हड्डियाँ कल-परसों तक
"मैं बाहर उगल दूँगी !
"चन्द रोज बाद ही तो
"चार गुनी बड़ी नज़र आएगी
"तब तू भी शिकार करती फिरेगी छोटी मछलियों का !
"बड़े-बड़े मगर तेरे चापलूस होंगे...
"मेरी एक-एक विशेषता
"उत्तराधिकार में तू हासिल कर लेगी
"तब तू किसी से नहीं डरेगी मेरी बच्ची !
"आह मेरी बच्ची ! वाह मेरी मुन्नी !
"अभी तो आ जा मेरे मुँह में
"देखना, यहाँ अन्दर क्या नहीं है !"

छोटी मछली सचमुच चली गई अन्दर
जी हाँ, वहाँ क्या नहीं था !
सब कुछ था ! सब्ब कुच्छ !!
शांति-मैत्री-सद्भाव-सुख-समृद्धि...
सीझे हुए विप्लवियों की अस्थियों के अम्बार...
चुसे हुए रक्त की उफनती हुई धार...
जगह-जगह चलाये जा रहे थे—
गुमराह करने की कलाओं के प्रशिक्षण कोर्स...
कंकड़ों-गिट्टियों को पीस-पीसकर—
केमिकल्स के योग से, ढाली जा रही थीं
लाखों-करोड़ों-अरबों स्वर्ण मुद्राएँ
क्रॉस, स्वस्तिक आदि चिह्नों वाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठप्पे-प्रतीक
तैयार किये जा रहे थे...जहरीली
पेस्ट के छोटे-बड़े ट्यूब, फसलें जलाने
वाले पाउडर...और जाने क्या-क्या
तैयार हो रहे थे लेबोरेटरियों में !
तो, छोटी मछली का सींकिया ढाँचा
उछल-उछलकर, उल्टी तिरछी भंगिमाओं में
घूम-घामकर मुआयना करता रहा अर्सा तक !!
(बेचारी का बदन गायब हो चुका था,
हज़म हो गया था, बड़ी मछली के
जठरानल की आँच में...सिर्फ
सींकिया ढाँचा ही बच रहा था !)

तो अन्त में हुआ यह कि
छोटी मछली का वो सींकिया ढाँचा
बड़ी मछली के मल-मार्ग से
एक रोज़ बाहर आ गया...
फिर एक अवधि के बाद—
जादुई करिश्मे से
छोटी मछली का सींकिया ढाँचा
मझोली मछली का आकार-प्रकार
धारण कर गया, दिखने लगा
तरुण 'ह्वेल' की भाँति !
दिखने लगा 'तरुणी ह्वेल' की भाँति
यानी बड़ी मछली की एक 'सम्पूर्ण शिष्या'
तैयार थी : उदीयमान 'मगरमच्छ'
भावी मादा 'मगरमच्छ'...
तैयार थी : जी हाँ, अब वो
आगे चलकर बड़ी मछली नं०-5,
या फिर बड़ी मछली नं०-7 कहलाएगी !
विश्व के सारे समुद्र इसके चारागाह होंगे
चारागाह, जी हाँ, लीला निकेतन और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिकार-क्षेत्र...
फिर तो पानी के छोटे-छोटे जीव
उसके उदर में समाते चले जाएँगे...
सुरसा की वो नानी तो यही चाहेगी
कि सारी की सारी दुनिया
उसी के जबड़ों के अन्दर आ जाए !!

"हाँ, अब ठीक है !
अब तो तू वरुण देवता की
'लायक औलाद'
हो गई : दूरदर्शी—जिम्मेदार
लेकिन अभी तुझे
दस बार मेरे जबड़ों के अन्दर
जाना है, वहाँ प्रशिक्षण लेने हैं तुम्हें तो !
आगे तू मेरे मल-मार्ग से नहीं,
मेरी साँसों से बाहर आएगी...
कभी कानों से बाहर आएगी...
कभी आँखों से बाहर आएगी...
और हाँ, आखिरी बार तो
तू मेरे मुँह से पानी के बुलबुले बनकर
निकलेगी...
और, हर बार ज्यादा बड़ी दिखेगी
और, हर बार तेरी पाचन-शक्ति बढ़ती जाएगी
और हर बार तू अपनी परछाईं से
आप ही चौंक-चौंक उठेगी
भविष्य में तेरे तन के अति सूक्ष्म छिद्रों से
रंगीन आभा फूटती होगी—
कभी नीली...
कभी गुलाबी...
कभी पीलिया...
कभी दूधिया...
कभी चटक-सुर्ख...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कभी मिश्रित तिनरंगी...
कभी जोगिया गैरिक...
कभी हल्की चम्पई...
कभी आसमानी...
कभी भूरी...
कभी मटमैली...
कभी मोतिया...
डार्लिंग, तू इस सबसे घबराना नहीं;
नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं
हाँ, मेरी बच्ची,
तू तनिक भी परेशान मत होना !
बिल्कुल नहीं
कतई नहीं
मेरी बच्ची, मेरी जान !
हाँ, एक ही खतरा है, जिससे
होगी तू परेशान
बल्कि, जरा-सी गफलत में
मिट सकता है तेरा नामोनिशान
तू बाक़ी सब कुछ करना
मगर पानी छोड़कर—
कभी किनारे लगने की
भूल न करना !
देखना, उस प्रलोभन से
अपने को बचाए रखना...
इस तरह युगों-युगों तक
मस्ती का अमृत रस चखना
हाँ, मेरी बच्ची,
हमारी बिरादरी को
वरुण देवता ने
सृष्टि के आरम्भ में ही
यह अभिशाप दिया था
किनारे पर मौत है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किनारे पर मौत है
किनारे पर मौत है
ओ मेरी बच्ची !
ओ मेरी बच्ची !
ओ मेरी बच्ची !
यों, तो मैं तेरे को
खबरदार करती ही रहूँगी
लेकिन तू खुद भी
अपने आपको क़ाबू में रखना !
बाक़ी सब-कुछ करना—
मगर ध्यान रखना...
किनारे पर मौत है
किनारे पर मौत है
किनारे पर—"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जान भर रहे हैं जंगल में

गीली भादों
रैन अमावस...

कैसे ये नीलम उजास के
अच्छत छींट रहे जंगल में
कितना अद्भुत योगदान है
इनका भी वर्षा-मंगल में
लगता है ये ही जीतेंगे
शक्ति प्रदर्शन के दंगल में
लाख लाख हैं, सौ हजार हैं
कौन गिनेगा, बेशुमार हैं
मिल-जुलकर दिप-दिप करते हैं
कौन कहेगा, जल मरते हैं...
जान भर रहे हैं जंगल में

जुगनू हैं ये स्वयं प्रकाशी
पल-पल भास्वर पल-पल नाशी
कैसा अद्भुत योगदान है
इनका भी वर्षा-मंगल में

इनकी विजय सुनिश्चित ही है
तिमिर तीर्थ वाले दंगल में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्हें न तुम 'बेचारे' कहना
अजी यही तो ज्योति-कीट हैं
जान भर रहे हैं जंगल में

गीली भादों
रैन अमावस...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फसल

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेरसारी नदियों के पानी का जादू :
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा :
एक की नहीं,
दो की नहीं,
हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म :

फसल क्या है ?

और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपान्तर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हेमन्ती बादल हैं

हेमन्ती बादल हैं...
इनकी अगवानी में दादुर नहीं बोले !
कोयलों ने कूक नहीं भरी, पर नहीं तोले
इनकी अगवानी में—
चातक तक मौन रहे, मोर नहीं डोले !
हेमन्ती बादल हैं
जाने कहाँ, जाने किधर—
बरसाकर आए हैं बरफ के गोले !
सुलभ है
तटवर्ती द्रुमों का सहारा
रुपहली सीपियों ने अधर पुट
क्यों नहीं खोले !
हेमन्ती बादल हैं...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नदियाँ बदला ले ही लेंगी

प्रभु सत्ता के मेरु-शिखर पर
फिर से बैठ गयी हो जमकर
मतपत्रों को चबा रही हो
लील रही हो लुगदी थम-थमकर
कुछ तो दया करो पब्लिक पर
कुछ तो रहम करो मौसम पर
कुछ तो रहम करो जी खुद पर
खाओ तरस तनिक तो हम पर
प्रभु सत्ता के मेरु-शिखर पर
फिर से बैठ गयी हो जमकर

जीर्ण - शीर्ण है संविधान यह
जैसा अपना पुरुष - पुरातन
नित्य नवीना प्रकृति तुम्हारी
देती अध्यादेश दनादन
बाकी दलपति महिषासुर हैं
काम नहीं आया मशीनगन
चमत्कार पर चमत्कार से
सचमुच अघा गया क्या जन-मन
जीर्ण - शीर्ण है संविधान यह
जैसा अपना पुरुष-पुरातन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकी सारे पुरुष - पुरातन
मात्र एक तुम नित्य नयी हो
अब तो तुम भारत-माता हो
अब तो तुम आनन्दमयी हो
महिला क्या तुम महामर्द हो
बजरंगी हो कालजयी हो
मौसम तुम से मार खा गया
पालिटिक्स की तुम कलई हो
बाकी सारे पुरुष - पुरातन
मात्र एक तुम नित्य नयी हो

तुम तो सचमुच घासलेट से
अबके चिल्का - झील भरोगी
कहते हैं बेहद दयालु हो
जन - जन के दुख - दैन्य हरोगी
सेन्टर में हो पूरब - पश्चिम—
उत्तर - दक्षिण एक करोगी
युग - देवी हो, सूक्ष्म भाव से—
खाली बस मतपत्र चरोगी
तुम तो सचमुच घासलेट से
अबके चिल्का - झील भरोगी

हम धीरज से सुना करेंगे
गाल बजाओ भाषण मारो
जै, जै, जै, जै जगत्तारिणी
अपने खानदान को तारो
अन्दर हो अशांति पर बाहर
विश्वशांति के मंत्र उचारो
शत्रु - शत्रु हैं, मित्र - मित्र हैं
उन्हें डुबाओ, इन्हें उबारो
हम धीरज से सुना करेंगे
गाल बजाओ भाषण मारो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वहाँ बँट रहे डीजल - चीनी
यहाँ किरासन च्यवनप्राश है
खाना नहीं पका है कल से
अपने कवि का मुँह उदास है
पोती नया कलेन्डर लाई
फोटो में फिल्मी हुलास है
आग लगेगी तुम दौड़ोगी
झुग्गी में भी श्री निवास है
वहाँ बँट रहे डीजल - चीनी
यहाँ किरासन च्यवनप्राश है

बनी रहेगी रात युगों तक
देखो इसको प्रात न करना
नियमित हरिजन - वृध के आगे
अश्वमेध की बात न करना
तीन - तीन हैं, पाँच - पाँच हैं
देखो इसको सात न करना
उल्लू बैठे मुंडेरों पर
तुम उन पर दृक्-पात न करना
बनी रहेगी रात युगों तक
देखो इसको प्रात न करना

इस होली में भूमिहीन की
किस्मत का भुट्टा सिकता है
खेतों में बन्दूकें उगतीं
टके सेर तो बम बिकता है
क्रान्ति दूर है, सच - सच बतला
बुद्धू, तुझको क्या दिखता है
आ, तेरे को सैर कराऊँ
घर में घुसकर क्या लिखता है
इस होली में भूमिहीन की
किस्मत का भुट्टा सिकता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखो, देखो, वामपंथ का
असर नहीं फैले उत्तर में
देखो, देखो, इस पंजे की
छाया राज करे घर - घर में
पारसबीघा की लपटों का
धुआँ दिखे अवनी - अम्बर में
सारे चीफ मिनिस्टर रेंकें
भजनलाल के मीठे स्वर में
देखो, देखो, वामपंथ का
असर नहीं फैले उत्तर में

गिरिजन-हरिजन सब तो सहते
सोचा था हम भी सह लेंगे
सोच लिया था हमने पहले
तीस महीना चुप रह लेंगे
जो भी बातें कहनी होंगी
घर के अन्दर ही कह लेंगे
जिस धारा में सभी बह रहे
सोचा था हम भी बह लेंगे
गिरिजन-हरिजन सब तो सहते
सोचा था हम भी सह लेंगे

लेकिन तीस दिनों में ही तो
दम घुटता लगता है अपना
बीसों सूत्र दहक उट्ठे हैं
सुन लो, रोना और कलपना
व्यर्थ हो रहा विपक्षियों का
गुप - चुप वोटर - वोटर जपना
झोंके पकवानों का आया
फागुन में चीनी का सपना
लेकिन तीस दिनों में ही तो
दम घुटता लगता है अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थिर सरकार बनी है अबकी
ढाँचा है इसका फौलादी
फिर से सधे बीस सूत्रों की
दुनिया भर में फिरी मुनादी
फुः विपक्ष की कानी आँखें
बुला रहीं अपनी बरबादी
सो - सौ संजय वापस लाए
संत - मेंत अपनी आजादी
स्थिर सरकार बनी है अबकी
ढाँचा है इसका फौलादी

सुनो, सुनो जी, थिरक उठे हैं
फिर से वही राग - दरबारी
वही सिपाही, वही मुलाजिम
वे अफसर, वे ही अधिकारी
देखो, देखो, वापिस आये
सारे ही मुंशी पटवारी
आसन-फांसन शुरू हुए फिर
हवन हो गये फिर से जारी
सुनो, सुनो जी, थिरक उठे हैं
फिर से वही राग - दरबारी

पगली ने तो शुरू कर दिया
फिर से अपना खेल पुराना
हटो, हटो, ओझल हो जाओ
खुद भी बचना, मुझे बचाना
हुए निछावर जो, उनपे तो
लुटा रही है खुला खजाना
धारण कर रक्खा है उसने
अबके तो भगतिन का बाना
पगली ने तो शुरू कर दिया
फिर से अपना खेल पुराना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गद्दी से उतरे मोरारजी
तीस महीने गुजर न पाये
घटक-घटक में उठा-पटक थी
कौन भला किसको समझाये
कूटनीति की जादूगरनी
लौटी तो बच्चे मुसकाए
महँगाई ने नई अदा से
चमकीले आँचल लहराए
कूटनीति की जादूगरनी
लौटी तो बच्चे मुसकाए

माई जी का अलग मंच है
बेटा व्याकुल है तिकड़म में
बैश्नोदेवी मुसकाई थी
क्या रक्खा है नेम-धरम में
पब्लिक को ठगने की नीयत
घुली हुई है मरम-मरम में
समझ सकेंगे नहीं फर्क ये
सख्त-सख्त में नरम-नरम में
माई जी का अलग मंच है
बेटा व्याकुल है तिकड़म में

भारत माता की काया में
गलित कोढ़ के घाव देखिए
नये नये वाजिदशाहों के
भीतरघाती ताव देखिए
पूरब-उत्तर की आँधी में
हिलती हैं वो नाव देखिए
दिल्ली वाली देवी जी के
वचन सुन लिए भाव देखिए
भारत माता की काया में
गलित कोढ़ के घाव देखिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत - पुत्री ही सवार है
भारतमाता के सीने पर
खुदगर्जी में, औरों के तो
शर्त लगाती है जीने पर
इसकी खातिर कोटि - कोटि जन
आज बाध्य हैं विष पीने पर
लाख लाख मन रुई निछावर
इस छटाँक भर पशमीने पर
भारत - पुत्री ही सवार है
भारतमाता के सीने पर

न्यायमूर्ति कठमुल्ले होंगे
न्यायपालिका शीश धुनेगी
संविधान की पंक्ति - पंक्ति अब
दण्डनीति का जाल बुनेगी
जग जीतेगी भारत - पुत्री
नहीं किसी की एक सुनेगी
वही हँसेगा जिसे कहेगी
वह बोलेगा जिसे चुनेगी
न्यायमूर्ति कठमुल्ले होंगे
न्यायपालिका शीश धुनेगी

खीझ उठा हूँ खुद ही खुद पर
क्यों न तुम्हारा यश मैं गाता
कल परसों थी भारत - पुत्री
आज बनी हो भारतमाता
चरण चूमने को आतुर हैं
सौ 'बौद्धिक', सौ - सौ 'निर्माता'
सौ - सौ की तुम 'उद्धारक' हो
सौ - सौ की हो 'जीवनदाता'
खीझ उठा हूँ खुद ही खुद पर
क्यों न तुम्हारा यश मैं गाता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्धू का दिल तो कहता है
अबके भारी गहन लगेगा
बुद्धू का दिल तो कहता है
अबके संसद भवन ढहेगा
बुद्धू का दिल तो कहता है
बच्चा - बच्चा अस्त्र गहेगा
बुद्धू का दिल तो कहता है
कोई अब न तटस्थ रहेगा
बुद्धू का दिल तो कहता है
अबके भारी गहन लगेगा

हाँ, पानी में आग लगाओ
नदियाँ बदला ले ही लेंगी
नयन - नीर सिंचित खेतों को
शोणित की धारें धो देंगी
यह तिकड़म ऐसी गतिविधियाँ
क्या तो साथ हमेशा देंगी
अन्त करेंगी यही तुम्हारा
यही तुम्हारी जड़ खोदेंगी
हाँ, पानी में आग लगाओ
नदियाँ बदला ले ही लेंगी

●●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon